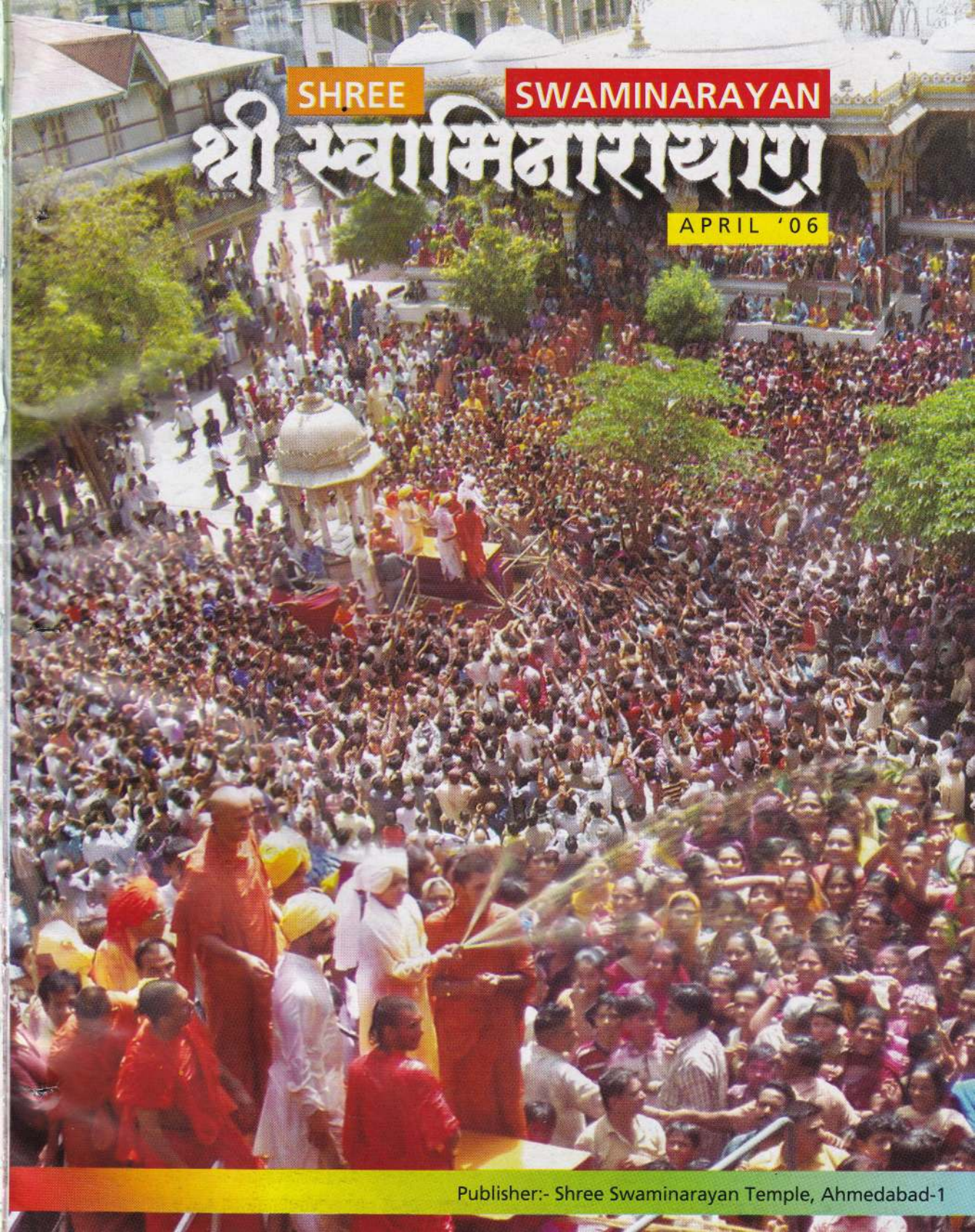


SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

APRIL '06

Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



चराडवा मंदिर में नूतन स्वर्ण सिंहासन का उद्घाटन करके आरती उतारे हुए प.पू. महाराजश्री ।



चराडवा मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



खाण (राज.) मंदिर में राधाकृष्णदेव, श्रीहरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



राणीप मंदिर (बहनो के) में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



खाण मंदिर में पाटोत्सव के प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



खाण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर कथा के वक्ता शास्त्री ज्ञानवल्लभदासजी (मूली महंतश्री) को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ अप्रेल -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	अद्‌भुत आशीर्वचन	४
४.	हनुमान जयंती	७
५.	श्री अविशानन्द स्वामी	९
६.	सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी (पर्व-३)	१२
७.	महानिष्कामी मुकुन्दाजन्द ब्रहाचारी	१४
८.	सत्संग बालवाटिका	१५
	(१) सम्पूर्ण जिन्दगी लाली जैसी ?	
	(२) उपदेश छोटा फायदा बडा	
९.	प्रश्नपेटी	१७
१०.	भक्तिसुधा	१८
	(१) मूर्ति	
	(२) चिन्ह तिल ध्यान	
	(३) सहजानन्दी मीरा	
	(४) भगवान का मंगलकारी यत्रि	
	(५) दूध से अधिक मीठी छाछ	
११.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

रंगबिरंगी सुगंधित पुष्पों के रंग से भगवान श्री नरनारायणदेव के प्राकट्योत्सव को जिससात्विकता से मनाया जाता है, वैसा ही वसन्तोत्सव के स्वागत से सात्विकता से परिपूर्ण वातावरण हो जाता है । इसी के साथ ज्ञान तथा भक्ति को प्राप्त करके जीवन को आत्यंतिक मोक्ष तक पहुंचने का सरल मार्ग मिलजाता है । इसी से तो सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने वसंत के प्रथम दिन ही अपने दिव्य स्वरूप का ज्ञान कराने वाली शिक्षापत्री को लिखा था । जो श्रीजी महाराज का साक्षात् प्रगट वांङ्मय स्वरूप सत्संग में विराजमान है । जीवमात्र को यदि परमेश्वर के धाम की चाहना हो तो शिक्षापत्री में प्रबोधित मार्ग पर चलने से ही धाम की प्राप्ति होगी । स्व मन गढन्त शास्त्रों का खींचतान कर अर्थ करने से भगवान के धाम की प्राप्ति करना विद्वानो ने ख पुष्प की तरह मिथ्या कहा है । जैसे आकाश में पुष्प कभी हो ही नहीं सकता उसी प्रकार श्रीहरि द्वारा बताई गयी शिक्षापत्री की मर्यादा का उल्लंघन करके वर्तन करने से आकाश में पुष्प जैसी उसकी सभी क्रियाये व्यर्थ हैं । इसलिये अपने मनुष्यजन्म को अंतिम मानकर तथा इस जन्म को सार्थक करने के लिये श्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार दोने गादि स्थान श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायण देव संस्थान के साथ जुड जाना चाहिए । अर्थात् अपना भौतिक संबन्धी व्यवहार दशवां या वीसवां भाग दान के रूप में अवश्य करें यही भौतिक व्यवहार कहा जायेगा, इसके साथ आध्यात्मिक संबन्ध अर्थात् मंत्रदीक्षा, उपासना तथा ज्ञान के लिए श्रीहरि स्थापित धर्मवंशी आचार्य के साथ जुडा होना चाहिए । उन्ही के पास से ज्ञान प्राप्त करना तथा गुरुमंत्र लेना एवं भागवती दीक्षा ग्रहण करना ही आध्यात्मिक सम्बन्ध कहा जायेगा । यह सभी शिक्षापत्री के अनुसार होना चाहिए । तभी स्वामिनारायण भगवान के धाम की प्राप्ति सम्भव है, अन्यथा जिसे अन्यत्र जाना हो उसकी बात अलग है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मार्च -२००६

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा पाटोत्सव प्रंसग पर पदार्पण ;
प.भ. डी. डी. पटेल के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क ।
२. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८४वां पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से किये ।
प.भ. अश्विनभाई बलदेवदास भावसार के यहाँ पदार्पण, नवावास ।
३. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में मूर्ति प्रतिष्ठा स्वहाथों से किये ।
प.भ. विनोदभाई भीखाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण माणेक चौक
प.भ. जयेन्द्रभाई करशनभाई सुहागिया के यहाँ पदार्पण, निकोल गाँव ।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया मूर्ति प्रतिष्ठा पर षोडशोपचार पूजा-अभिषेक तथा ब्राह्मण भोज अपने हाथों से किये ।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकरवाडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, सायंकाल खाणगाँव में पदार्पण ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण (राज.) पाटोत्सव अभिषेक अपने हाथों से किये ।
९. राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. अखिल हिन्द श्रीमाली सोनी महा मंडल संचालित सार्वजनिक दवाखाना तथा छात्रालय में पदार्पण, नवावाडज।
१४-१५. मांडवी (कच्छ) फूलदोलोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१७. कोलाद (कडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर के दशवें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१८. प.भ. पुष्पाबहन गिरीशभाई भगत के यहाँ पदार्पण, एलिसब्रिज ।
बालवा गाँव में विजय स्तंभ के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. प.भ. प्रवीणभाई नरसिंहभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मेमनगर ।
२०. श्री स्वामिनारायण सलकी (ता. दहेगाम) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२१-२२. जीरागढ (हालार-मुलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२४-२५. माधापर (कच्छ) में पदार्पण ।
२६. बालासिनोर गाँव में प.भ. अजयकुमार नटवरलाल काछिया की तरफ से आयोजित श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२७. श्री स्वमिनारायण मंदिर कोठंबा में पदार्पण ।
२८. डॉ. जयकृष्ण बिपीनभाई जानी के क्लिनिक के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, साबरमती ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

अद्‌भुत आशीर्वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)



इष्ट देव स्वामिनारायण भगवान को सच्चे अर्थ में जिसने पहचाना वही श्रीहरि द्वारा स्थापित देव-आचार्य की महिमा को पहचान सका है । वही व्यक्ति शिक्षापत्री की व्यवस्था को जान सका है । उसी व्यक्ति में निष्ठा हैं, वही व्यक्ति प.पू. धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के मुख से निकले शब्द की कीमत समझ सकता है अन्य तो गिलहरी की तरह इतस्ततः बोलते है और पूछ हिलाते है । निष्ठा विना के भक्त यत्र तत्र बात सुनकर मस्तक हिलाते है । प्रत्येक स्थानों पर प्रसाद खाने पहुँच जाते है, ये सभी देखकर स्पष्ट करना बडा कठिन लगता है । ऐसे भक्तों के ऊपर "स्वामिनारायण" मासिक पत्रिका भी जाती है । पता नहीं वे लोग बांचते है या नहीं यदि बांचते होगे भी तो जीवन में उतारने का प्रयास नहीं करते होंगे ।

ता. २-३-०६ के दिन श्री नरनारायणदेव के १८४ वें वार्षिक पाटोत्सव के प्रसंग पर धर्मकुल के मुख से उच्चरित अमृत वाक्य सभी को मनन करने योग्य है । जिसे यहाँ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ ।

प.पू. लालजी महाराजश्री सुन्दर दृष्टांत के साथ जो कहानी सुनाये उसका सार यह है कि परमात्मा अपने भक्तको सुखी करने के लिए उसके अनुकूल हो जाते है । जब दुःख में होता है तो उसे गोंद में उठा लेते हैं । अब भक्त को यह विचारने का अवसर नहीं कि भगवान मेरे साथ नहीं है ।

प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री : २८ वर्ष पूर्व मैंने जेतलपुर की प्रथमपदयात्रा की थी । उस के बाद से हम देखते हैं पूनम के प्रथम रात्रि के समय जेतलपुर के लिए ही पद यात्री जाते हैं । एक हरिभक्त ने हमसे कहा कि आपने जब से जेतलपुर धाम की पदयात्रा की उस समय से धाम की महिमा खूब बढ गयी है । हमें यह सुनकर हंसना आ गया । रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजकी जो महिमा है वह तो है ही । परंतु पदयात्रा से हमारी महिमा बढी है । नरनारायणदेव की महिमा हम सुनते आये हैं । लेकिन नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन विचारना यह है कि प्रभु अपने हृदय में कितना उतरे है, हमारी निष्ठा कितनी दृढ हुई है । राजा कैदी को छोड़ देता है, लेकिन प्रतिवर्ष नहीं छोडता ।

अपने प्रधानमंत्री लाहौर गये थे । सामान्य नियम यह है कि देश का कोई भी सबसे पडा अधिकारी आता है तब उसके संमान में तीनो सैनिको द्वारा सलामी की जाती है । परंतु पाकिस्तान का प्रमुख भी सेना का सबसे बड़ा अधिकारी था । वह अपने प्रधानमंत्री को सलामी मारने नहीं आया । वह दुश्मन के देश के

प्रधानंमत्री को सलामी मारने नहीं आया। वह दुश्मन के देश के प्रधानमंत्री को समाली नहीं मारना चाहता था । हमारे लिए वह अपमानजनक था । लेकिन उसके लिए सम्मान जनक था । हम जितनी जगह पर चावल रखते हैं, मस्तक नवाते हैं, दूसरी जगह पर १००० दंडवत करें वह सब भगवान नरनारायणदेव के सामने शून्य होजाता है । निश्चय, पक्ष, एकमात्र, नरनारायणदेव में होना चाहिए। श्रीजी महाराज का अनुग्रह सभी पर है ।

उदारता की बात करें तो महाराज ने नरनारायणदेव की जब प्रतिष्ठा किया उसके बाद ब्राह्मणों को कांकरिया तालाब के किनारे ब्रह्म भोज किये । ब्रह्म भोज में लड्डू में से घीबह रहा था। इतनी उदारता से भोजन कराया जा रहा था जिसकी कोई सीमा नही । हिसाबी व्यवस्था भी महाराज की सुदृढ थी। प्रतिष्ठा महोत्सव में महाराजने हरिभक्तों से कह दिया था कि जब व्यापारियों के यहाँ सीद्धा-सामान लाना तो उनसे यह निश्चित करना कि जो सामान बचेगी वह आपको वापस लेना होगा ।

अपने भीतर जितना नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ होगी उतना ही ऊर्ध्वगति होगी । नरनारायणदेव की यथार्थ महिमा को बताने के लिए हमने "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" नामक पुस्तक लिखी है । नरनारायणदेव की निष्ठा जितनी अधिक होगी, उतना ही सत्संग में अपनी महिमा बढेगी ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री : श्रीजी महाराजने ५०० परमहंसो की सेना लेकर इश सत्संग के लिए बहुत बडा उत्सर्ग किया है । हमें दिशा सूचन किया है । उसी राह पर चलना हम सभी का कर्तव्य है । अंग्रेजो ने दूसरे किसी को कुछ नहीं दिया, वे अंग्रेज महाराज के प्रभाव से प्रभावित होकर अहमदाबाद में मंदिर करने के लिए जहाँ आपको जगह चाहिए आप ले लीजिए इस प्रकार निवेदन किया । सदा के लिए लेख लिखकर महाराज ने उस समय की अंग्रेजी सरकार को कहा, तब वे असमर्थता व्यक्त किये । बाद में स्थायी लेख लिखवा दिये । महाराज का कैसा ऐश्वर्य कि अंग्रेज भी महाराज के आश्रित हो गये । नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर महाराज ने शिक्षापत्री ग्रन्थ में जो बात कही है । उसके अनुसार नीतिमत्ता, प्रमाणिकता तथा सदाचार का नियम रखे और जीवन में निष्ठा, निश्चय रखें तो महाराज खूब प्रसन्न होगे । यहाँ भक्तों को विशेष सुख सुविधा नहीं दी जाती तो भी कल्याण-मोक्ष की चाहना से लोग यहाँ आते है ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : महाराजने कल्याण की बात की है "वहेती कीधी अभरवाट, पुरुषोत्तम प्रगटी रे....." महाराज ने सुख सुविधा के मार्ग खोल दिया है। महाराज द्वारा बताये गये नियम में रहेनावाला भले उसे समाज पागल कहता हो तो भी उसका कल्याण होगा । वह संस्कृत भले न पढा हो यदि भगवान को भगवान के रुप में जाना है तो अवश्य भगवान उसे मिलेंगे । हम बडे भाग्य शाली हैं। भगवान ने तीन गूढ संकल्प किया उसमें मंदिर बनाने का प्रथम संकल्प करके नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया । बाद में तो लाखों मंदिर बने । जिन में महाराज की मूर्तियां है जो सदा के लिए सभी का कल्याण करने वाली हैं । हम कितने भाग्यशाली हैं । हमें जो मिला है वह जगत में कही नहीं मिलने वाला है । दिव्य चक्षु से ही यह देखना संभव होगा कि जो हमें मिला है वह ब्रह्मादिक देवों को दुर्लभ है । व्रत, जप, तप, हवन करके आपको भगवान मिले या न मिले, लेकिन आपको तो भगवान मिले ही है । हमें इसका गर्व होना चाहिए । जैसे किसी व्यक्तिका किसी बडे अधिकारी से संपर्क हो तो वह कालर ऊँचा करके चलता है हमे तो अनंत कोटि ब्रह्माडं के अधिपति मिले है । जिसके रोम रोम में अनंत कोटि ब्रह्मांड फिरता है । ये सभी बाते नंदसंतोने अनुभव करके लिखा है ।

निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तव घनश्याम .... कितने विशेषण ? निर्विकल्प, उत्तम, अति। यह प्रतिदिन नियम चेष्टा में बोला जाता है । कैसा निश्चय तो जिसका कोई विकल्प नहीं है । उत्तम अति जिसके आगे कुछ नही है। यह निश्चय केवल बोलने या सुनने के लिए नहीं है । यह तो अंतर में दृढ करने के लिये है । उतारने के लिए है। विना अंतर में उतारे शरीर को छोडना नहीं है ।

ऐशी दृढता हो तो भी यह सब करते रहना है। नित्य नई श्रद्धा रखनी है । विशेष दृढता हुईया नहीं इसकी

गणित आज पाटोत्सव के दिन सभी को करलेना चाहिए । पाटोत्सव में ३६५ दिन पूर्ण हो जाते है । पाटोत्सव में कीसी को देखे विना अन्तर्दृष्टि करके देखना चाहिए संतो में प्रीति है या नही, भगवान तथा भक्तो में प्रेम है या नहीं । प्रेम जो था उसमें वृद्धि हुई या नही । यदि कमी हो तो निष्ठा को और दृढ करना पडेगा । देव-आचार्य का बनकर रहना है यही प्रणालिका है। यदि आप देव का बनकर रहेंगे तो देव भी आपका बनकर रहेंगे । यदि आप देव का बनेंगे तो हम भी आपके होंगे । झोपडी होगी तो भी वहाँ आयेंगे । जो देवका नहीं तो उसका उत्तरदायित्व भी हमारा नहीं (इसे कहा जायेगा अद्‌भुत आशीर्वचन: जिसमें एक आत्मीय निष्ठा झलक रही है एक उत्तरदायित्व का भाव है, जिसे सभी को समझने की जरुरत है ।

यहाँ दो बात जरुर कहना है । एक दान की बात जो "स्वामिनारायण" पत्रिका में हम प्रतिमास दान भेंट के विषय में विशेष कोलम में लिखते है जीवन पर्यन्त दशावाँ - वीसवाँ भाग जो क्षमता के अनुकूल हो वह देव आफिस में जमा करा सकते है । आवक पडोशी से छिपा सकते है, महाराज से नहीं । धर्मादा (दान-भेट) देव को ही देना चाहिए । देवका ही मात्र यह अधिकार है । देव के साक्षी में कहता हूँ कि सुखी होना हो तो देश विभाग के अनुसार दान भेंट मात्र नरनारायणदेव की आफिस में अवश्य जमा करे । अन्यत्र नहीं ।

दूसरी बात यह कि पूज्य बापूजी के म्युझियम का संकल्प पूर्ण करने के लिए आप सभी कमरकस के तैयार रहना । एक के बाद एक गाँव में इस कार्य हेतु आना है । पू. बापूजी को परेशान नहीं करना है । आज तक तो परेशान किया ही है । यद्यपि इसे परेशान तो नहीं कह सकते क्योंकि बापूजी तथा हरिभक्तों में अन्योन्य प्रेम है । शहरवासी भी कमर बांध ले कहीं दीपक तले अंधरा । न रहजाय । पू. बापुजी म्युझियम को पूर्ण हने में २-४ वर्ष लगेगा ऐसा मानते हैं । यद्यपि हम पहले पूर्ण करना चाहते हैं । प्रसादी की वस्तुओं का त्वरित सभी को दर्शन हो यही चाहना है ।

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री : नट डोरी के ऊपर चलता है । जगत की दृष्टि उस पर रहती है । किन्तु नट की दृष्टि जगत के ऊपर नहीं रहती । लोग नट को देखते है, ताली बजाते है । परंतु नट किसको देखता है ? नट तो मात्र रस्सी देखता है । रस्सी के ऊपर से दृष्टि हटी की वह नीचे गिरा । जगत में जिसे भगवान मिले हैं उसे भगवान के सिवाय अन्यत्र दृष्टि नहीं जाती है । भगवान के भक्त दुनियाँ भर में रहते है, लेकिन भगवान का सतत सुख प्राप्त करते रहते हैं । भगवान मिले है इसका सदा ध्यान रखना चाहिए । जगत के प्रपंच में भगवान को भूल नहीं जाना । भगवान नहीं मिले होतेतो जीव की क्या दशा होती ? भगवान मिले तो ही चलना, बोलना, बैठना, हंसना, सुनना, देखना इत्यादि संभव हुआ । यह बात बहुत सामान्य लगती है, परंतु सच्चे अर्थ में इन सभी क्रियांओं की समज तो भगवान स्वामिनारायण ने दिया है।

महंत स्वामी पारायण वांचते है । यथार्थ रुप से जीव भगवान के साथ मिले, उसी के लिए यह प्रेक्टिकल है। ऐसा करते रहने से मन जो सतत जगत में भटकता रहता है वह कथा-पारायण से एकाग्र हो जाता है । यह मन की समान्य या सहज स्थिति है । इसलिए महाराज ने कहा निरन्तर जाग्रत अवस्था की तरह भगवान की महिमा को समझ कर जो भगवान के भक्तिरस में डूबा है उसी की यथार्थ समझ है ।

परप्रान्त में से आकर यहाँ वसे, सुखी हुए, लेकिन सुख किसमें हैं ? सब कुछ मिले, पर भगवान भूल जांय तो ? संस्कार खत्म हो गया ऐसा समझना चाहिए । नदी के उस पार बडा बंगला है, बंगला वहीं का वहीं रहता है, उसमें रहनेवाला इधर उधर घूमता रहता है । एकाध-पीढी चलेंगा बाद में मालिक बदल जायेगा । कारण यह कि वह भगवान को साथ में नहीं रखा । यदि भगवान को साथ रखा होता तो सब कुछ सुरक्षित रहता । अनीति से अर्जित किया गया पैसा सुरक्षित नहीं रहता है । वह सुख भी नहीं देता बल्कि जब आता है तो कुछ अहित होने लगता है । महाराज की आज्ञा में रहिए, उन्हीं की शरण में रहिए प्रयत्न करके एकबार तो भगवान का दर्शन अवश्य करलेना चाहिए । इसी में कल्याण है ।

पुत्र-पुत्री में भी दर्शन करने का संस्कार होगा तो कुटुंब सुखी होगा । देवदर्शन के लिए समय निकाले और अन्य को भी साथ लाने का प्रयास करे। इससे उस जीव का कल्याण तो होगा ही, महाराज आपके ऊपर प्रसन्न भी होंगे ।

हनुमान जयंती

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (महंतश्री नारायणघाट)



समाज के प्रत्येक क्षेत्र में शुभयोगदान देने वाले को सम्मानित किया जाता है । काल के बन्धन से रहित होकर युग युगान्तर तक लोग भावांजलि द्वारा सन्मानति करते रहते हैं। इसी प्रकार आज जो अपने कृत कार्यो से आदर्श बने हुए हैं ऐसे चिरंजीवी भक्तराज कविवर हनुमानजी के आगामी जन्मदिन के शुभ अवसर पर भावांजलि अर्पित करके कृतार्थ बनूँगा ।

बाल्यावस्था में एक सुन्दर फल की कल्पना से उगते हुए सूर्य को ग्रसजाने की इच्छा से केसरीपुत्र वानर को इन्द्र के वज्र का प्रहार होने से मूर्च्छित अवस्था में पवन देव के पक्ष से ब्रह्माजी के वरदान से हनुमान नामाभिधान हुआ । देवो की परिपूर्ण कृपा वाले हनुमानजी पराक्रम की परम्परा का सर्जन करने लगे । बल के साथ बुद्धि का समन्वय होने से साहित्य तत्वज्ञान, राजनीति, व्याकरण, मानसशास्त्र, तथा वक्तृत्व में विद्वता प्राप्त करके तथा समग्र विद्याओं में पारंगत होकर विनयी होने के कारण सद्‌गुणो के भंडार हो गये । श्रीरामचंद्र भगवान की भेट होने से सभी सद्‌गुण भगवत परायण हो गये । भगवान के मिलनकी आशा के बाद भक्तिमय सेवा का संचार प्रारंभ हुआ । ऐसी सेवा भक्ति प्रारम्भ करदी की जगत में सभी सेवकों में आगे हैं । उस समय भी कोई सेवा का कार्य आवे कि तुरंत ही हनुमानजी का नाम लिया जाता, अशक्य कार्य हो तो हनुमानजी, सीताजी खोज करनी थी तो हनुमानजी, सीता मैया का पता लगाकर पुनः भगवान राम के द्वारा सेतुबन्ध करना था तो वह अशक्य को शक्य किया ।

अशोक वाटिका को नष्ट करके भगवान राम की शक्ति का परिचय दिया । विशल्य करणी औषधि के लिए सम्पूर्ण पर्वत उठा ले गये । सीता को परिचय देकर भगवान ही आप को रावण की शैन्य शक्ति का नाश करके लेने आयेंगे । रावण को जीतने वाले राम बीर की सहायता करने वाले स्वयं छाती को फाड़ कर महाप्रभु का एकमात्र जिसके हृदय में राज्य है स्वयं महावीर हनुमानजी । सीताजी ने पुरस्कार में जिस नवलखा हार को दिया उसके एक-एक दाने में महाप्रभु को निरखने वाले स्वयं वीर हनुमानजी । प्रभुविना सबकुछ निर्माल्य मानने वाले परम वैरागीश्री हनुमानजी प्रभु राम को प्राण से भी अधिक प्यारे हो गये थे । फिरभी भगवान के चरण में ही अपना स्थान मानकर दास भक्ति का ज्वलंत उदाहरण बने ।

कृष्णावतार में अर्जुन के रथ की ध्वजा में विराजमान होकर समग्र महाभारत के युद्ध में विजयपताका फहराने के यशभागी बने । भगवान स्वामिनारायण के जीवन कार्य के प्रारंभिक भूमिका में कुलदेवता के स्म में कृत्याओं से रक्षा करके, कालिया, कौशिक, कालिदत्त जैसे राक्षसों के कोप के समय भक्ति माता तथा धर्मपिता को सान्त्वना देकर बाल घनश्याम महाप्रभु की याद ताजी कराते रहे । श्रीहरि के गृहत्याग के बाद श्री रामप्रतापभाई तथा सुवासिनी भाभी को सांत्वना देकर समय समय बनविचरण का समाचार देते रहे । इसके अलावां बन विचरण के समय वर्णिराज के हर संकट में साथी बनकर सेवा में रहते । कभी तो हनुमानजी ने वर्णी को फल-फलादिक दिया, तो कभी पिबक जैसे पापी को भी पाठ पढाया । कभी निद्राधीन निःसहाय हरिवर की जंगल में रातभर निशाचरों से रक्षण हेतु चौकीदारी करते, तो कभी वर्णीराज के ध्यानस्थ मुद्रा में असुरों के प्रहार को अपनी गदा से रोककर प्रहार करते, उस समय भगवान ने मुस्कराते हुए कहा हे अंजनिपुत्र आप तो सेवकधर्म में सदाप्रशंसनीय है, हमारी यह कठोर तपस्या का समय है मैं इस समय स्वयं सेवकधर्म में हूँ, आपने मेरा बडा उपकार किया है, इससे भीअधिक आप को सत्संग विकाश में कार्य करना है, उस समय मैं आपको याद करुँगा, इस समय आप जाइए ।

इस समय प्रत्येक रामजी के मंदिर में हनुमानजी की स्थापना होती है ।

समग्र हिन्दुस्तान में भाग्य से ही कोई ऐसा गाँव या स्थान होगा जहाँ पर हनुमानजी का मंदिर नहीं होगा । भगवान स्वामिनारायण ने भी अपने मंदिरों में गणपतिजी के साथ हनुमानजी को प्रतिष्ठित किया है । शिक्षापत्री में भी सर्वजीव हितावह आदेश किया है कि "आश्विन कृष्ण चतुर्दशी के दिन हनुमानजी की पूजा करना" इस प्रकार भगवानने भक्त की महिमा का प्रवर्तन किया ।

हनुमानजी सदा स्वयं को एक दृढ भक्त मानते हैं । लेकिन स्वयं भगवान नहीं मानते । उपासना आराधना केवल भगवान की ही होती है भक्त की कभी नहीं । भगवान के साथ भक्त की पूजा हो सकती है, उनकी आरती-भोग इत्यादि भगवान के संबंन्ध के नाते हो सकता है, भगवान के प्रसाद स्म ! हनुमानजी की प्रसन्नार्थ रामभक्ति प्रबल बने यही हेतु स्पष्ट होना चाहिए । जिसके ऊपर रामप्रभु की असीम कृपा हो उसी के रक्षा कार्य में हनुमानजी सदा हाजिर रहते है । परंतु राम को विसार कर हनुमानजी की उपासना खंडित होती है । ऐसे के ऊपर प्रभु तो क्या स्वयं हनुमानजी भी कदापि प्रसन्न नहीं होते । तुलसी को मिला भूत, और भूत से हनुमान, हनुमान से मिले राम इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण द्वारा उपासना मार्ग की भक्ति भी प्रबोधित है । इस प्रकार चैत्र शुक्ल पूनम को हनुमत जयंती के स्म में प्रसादी के यात्राधाम जमीयतपुरा में तथा कांकरिया एवं असारवा श्री स्वामिनारायण बाग में आदि आचार्य १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के वरद हाथों से प्रतिष्ठित हनुमानजी के जन्म जयंती के अवसर पर कोटि कोटि वन्दन !

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का (श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लाभार्थ) विदेश प्रवास

		संपर्क
ता. 21-4-2006	न्युजर्सी विहोकन	न्युजर्सी मंदिर 201-865-3987
ता. 22-4-2006	न्युजर्सी विहोकन	
	श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा	
ता. 23-4-2006	फ्लोरिड	फ्लोरिडा मंदिर 863-687-4776
ता. 24-4-2006	फ्लोरिड	
ता. 25-4-2006	फ्लोरिड	
ता. 26-4-2006	बायरन	प.भ. दशरथभाई 478-714-9444
ता. 27-4-2006	मेकन	प.भ. जेयन्द्रभाई 478-956-2800
ता. 28-4-2006	मेकन	
ता. 29-4-2006	एटलान्टा	प.भ. प्रवीणभाई 404-808-1079
ता. 30-4-2006	एटलान्टा	प.भ. राजेशभाई 404-808-1079
ता. 1-5-2006	एटलान्टा	प.भ. प्रवीणभाई 770-978-1915
ता. 2-5-2006	एटलान्टा	
ता. 3-5-2006	बर्मिन्गहाम	प.भ. कल्पेशभाई 256-461-9514
ता. 4-5-2006	बर्मिन्गहाम	
ता. 5-5-2006	नेशवील	प.भ. जयंतीभाई 615-491-3966
ता. 6-5-2006	नेशवील	
ता. 7-5-2006	न्युजर्सी	
ता. 8-5-2006	न्युजर्सी	
ता. 9-5-2006	भारत के लिये वापसी	

संपर्क : प.भ. प्रहलादभाई पटेल (Mo.) 201-306-7890 (R) 201-766-3814

श्री अविशानन्द स्वामी

- चन्द्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

अरे, भवानी शंकर आप यहाँ आओगे ? हमारे चरण के तलुये देखो न, शास्त्रों के जानकार जो भी हमारे पग को देखते हैं वे सभी हमे भगवान मानते हैं। मेरे पग में ऐसा क्या है, थोडा देखो न।

भगवान श्रीहरि अहमदाबाद में विराजमान थे। भवानीशंकर नजदीक के आये और भगवान के चरणों को देखने लगे। जिन चरणों में सामुद्रिकशास्त्र के अनुसार सोलह चिन्हो को देखा। उनकी शरीर रोमाञ्चित हो गयी, क्योंकि वे एकदिव्य विभूतिका चरणारविंद अपने हाथ में लिये थे - बाद में कहने लगे।

हे कृपानाथ ! नि:शंक आप भगवान है। आज से अपने आश्रितो में मेरी भी गिन्ती कीजिएगा। आप किस लिये मुझे बुलाये यह मैं जानता हूँ, आप स्वयं सर्वविद हैं। भक्तों के लिए कल्पतरुहैं। करुणा के सागर हैं ?

भवानी शंकर के मन की धारणाओं को स्वीकार करते हुए मुस्कान कर रहे थे। एक ब्राह्मण देवता धर्मकुल के आश्रित हुए।

भवानी शंकर विशनगर के ब्राह्मण थे। इनकी पत्नी यमुना बा के कोंख से बापालाल, मोतीलाल तथा केशवलाल ये तीन पुत्र एवं पार्वती तथा काशी दो पुत्रियां पैदा हुई। साधारण स्थिति का यह कुटुम्ब सत्संग की रीति के अनुसार सदाचारी बनकर जी रहा था।

बीच के पुत्र मोतीलाल का स्वभाव थोडा विचित्र था। अहमदाबाद में ढींकवा चौकी के पास एक विद्यालय में विद्या ध्ययन करते थे। सारंगपुर में परिवार रहता था। एकदिन ब्राह्मण समाज का भोजन समारंभ था। घर में रसोई करना था, मोतीलाल को बाहर का भोजन अच्छा नहीं लगता था। जिससे भाभी तथा बडेभाई को कहे कि हम भोजन में नही आयेगें। मेरे लिए खिचडी बना देना, हम यही जिम लेंगे।

मोतीलाल ज्यों भोजन करने बैठे त्यों पिताजी आगये, खिचडी खाते देखकर क्रोधित हो गये। आवेश में आकर बेटे के आगे की थाली उठाकर दूर फेंक दिये।

पता नहीं किस कारण से माता पिता अपनी संतान के प्रति ऐसी क्रूरता का व्यवहार करते हैं। कवि दलपतराम के पिता डायाभाई बालकपन में स्वपुत्र को सामवेद पढाते थे। अग्निहोत्र के कुंड के पास बैठा कर बेटे से सस्वर मंत्र पाठ करवाते और स्वयं हवन करते थे। एकदिन उच्चारण में कोई भूल हो गयी, डाह्याभाई तो दुर्वासा का स्म धारण करके उनके ऊपर पूजा की थाली फेंकर मारे। परिणामत: हाथ का अंगूठा टूट गया। कभी-कभी तो दलपतराम को लकडी से मारा करते थे . वे कहते थे कि अभी भी पिता की मार से बांया स्कन्ध दूखता है।

बालबुद्धि मोतीलाल से यह सहन नहीं हुआ, दु:खित होकर घर छोड दिये। जेतलपुर में आनन्द स्वामी के पास जाकर रहने लगे। जिन्दगी में ऐसा बहुत प्रसंग आता है जो व्यक्ति के जीवन को बदल देता है। मनुष्य स्वभाव का अभ्यासी वा R. Smith नामक विद्वान ने लिखा है कि Most of the critical things in life, which become the starting point for human destiny, are little things मानव के भाग्य निर्माण करने में कई घटनायें सहायक होती है।

मोतीलाल जब जेतलपुर गये, उस समय उनकी माता यमुना बा भी अपनी काकी गंगा बा के घर सेवा में थी। पुत्र को मनाकर वापस अहमदाबाद ले आई। फिर भी मन उनका परिवार से अलग रहने लगा था। संवत १९०६ में पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार किया। साथ में विवाह भी कर ने को कहा। लेकिन मोतीलाल विवाह के लिए तैयार नहीं हुए। काशी की यात्रा में जाने के समय बटुक ब्रह्मचारी सीधा अहमदाबाद मंदिर में आया। अयोध्याप्रसादजी महाराजने उस बटुक को वासुदेवानंद ब्रह्मचारी को सौंप दिया। थोड़े समय बाद उस बटुक को ब्रह्मचारी की दीक्षा भी दे दिया।

वे ब्रह्मचारी सद् गु. श्री अविनाशानंद स्वामी अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा वासुदेवानंद ब्रह्मचारी के बड़े ही कृपा पात्र थे। अविनाशानंद स्वामी की काव्य कीर्तन में विशेष रुचि देखकर आचार्यश्रीने उन्हे भुज की काव्यशाला में पढने के लिए भेंज दिया। वहाँ पांच वर्ष तक पिंगल छन्द शास्त्र, अलंकार शास्त्र इत्यादि ग्रंन्थों का सम्यग् अध्ययन करके अहमदाबाद वापस आये और महाराजश्री की सेवा में सत्संग प्रचार में जुड गये। वे वासुदेवानंद ब्रह्मचारी के मंडल में थे। ब्रह्मचारी उदारानंदजी,, ब्र. माधवानंदजी, ब्र. सत्यानंदजी, ब्र. निर्मानानंदजी, ब्र. अशोकानंद, ब्र. देवानंदजी, ब्र. किपलेश्वरानंदजी इत्यादि संत इस मंडल में थे। उदारानंद,

सत्यानंद, माधवानंद भोजन कला में प्रवीण थे। वासुदेवानंदजी के साथ रहने से अविनाशानंदजी का तीव्र वैराग्य था। शिक्षापत्री की आज्ञा का अक्षरशः पालन करते और दूसरे से कराते भी छे।

अयोध्याप्रसादजी महाराज में अधिक प्रेम था। महाराजश्री को गुरुके अलावा मातापिता भी मानते थे। महाराजश्री के अक्षरवासी होने के बाद सं. १९२४ में के शवप्रसादजी महाराजश्री नरनारायणदेव के पीठाधिपति बने।

अविनाशानंद स्वामी माणसा मंदिर के महंत थे, वहाँ उग्र प्रकृति के कारण भक्तराज नरसिंह के साथ मतभेद होने से महंत पद का परित्याग कर दिये। वहाँ से मकाखाड गये। वहाँ हरि भक्तों के सहयोग से मंदिर बनाये, कीर्तन लिखते थे। श्रीहरि की लीलाओं का पद बनाते थे। कुछ समय ही वहाँ बीता था कि गाँव के किसी हरिभक्त से कहा सुनी हो गयी, फिरभी मन को दृढ करके सत्संग प्रचार हेतु अगल-बगल के गाँवो में घूमते थे। सत्संगी लोग उनके प्रति गुरुभाव रखते थें।

अविनाशानंद स्वामी ने गाँवो में रहकर भी विपुल साहित्य का सर्जन किया है। अपने दीक्षा गुरु के धाम में जाने के बाद अवधविरहनामक ग्रन्थ लिखा। सं. १९२६ में वह ग्रन्थ पूर्ण हुआ। लांदणज की लीला २८ अध्याय में इस ग्रन्थ को माणेकपुर रहकर लिखे थे। सं. १९३४ में छपैया माहात्म्य नामक ग्रंथ लिखें। सं. १९३७ में कवित्त रामायण की रचना की। आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजकी प्रशंसा करते हुए केशव दिग्विजय नामक ग्रन्थ भी लिखे। श्रीहरि के भावना में लीन होकर कीर्तन को लिखे। हरिलीलासिन्धु नामक ग्रन्थ भी आपकी रचना है। वैष्णवानन्द स्वामी रचित वचनामृत का पद्य काव्यान्तर का संशोधन भी आपने ही किया था। उनकी रचना - वासुदेव माहात्म्य, निष्कामशुद्धि, भाषाभूषण, भाषाव्याकरण, काव्य कुतूहल, रस रहस्य, हरिरस पिंगल, भगवतपिंगल, वेदान्त चूर्णी इत्यादि मानी जाती है।

श्रीहरिलीलासिन्धु ग्रंथ हिंन्दी भाषा में लिखा गया है। जैसे समुद्र में से चौदह रत्न छुपे थे, उसी प्रकार इस ग्रन्थ सें सभी रत्न छुपे हुए हैं। वैष्णवानन्द द्वारा रचित यह ग्रन्थ अधूरा था जिसे अविनाशानंदने पूर्ण किया। अविनाशानंद की कवित्वशक्ति तथा एक निष्ठा भक्ति अलौकिक थी।

स्वामीने एकसौ पैंसठ चरण का हरिआख्यान लिखा है। शिक्षापत्री का हिन्दी में अनुवाद भी किया है। उनकी कितनी ही काव्य रचना यहाँ देखे -

रसन जसन हिरना कहे फसन बदत मुख फंद।
छंद कहत सो रसवकुं दादुर सम दुःख कंद॥

जिसकी जिह्वा हरि गुणगान के बदले जगत के प्रपंच में लगी है उसे मेढक की उपमादिये हैं -

अक्षरधाम के धामी मनोहर साम,
सदा सुख धाम नमामि,
नामि सदा सवनामन के सवईश
अनीश के अंतरजामि।
मुक्त अनन्द उपासत है, नित भक्त
एकांतिक भाव भजामि।
नाम सदर निगमागम के, पुरुषोत्तम
पूरन काम अकामि।

श्रीहरि के मूर्ति का वर्णन

धवल दुकूल हरि तन पर धारे
धवल सुयश जगविदित उजारे।
धवल नवलवर सुमन सुहावा,
धवल हार हरि उरधरावा।
धवल रुमाल धरे सुत धरमा
धवल दशन मुख हसन सुपरमा।
धवल नवल सिंहासन धारी,
ता पर बैठे नवल विहारी।

•

सकल सभा मध शामजन,
अकल आप अवतारी
राजत राजन राज हरि
जन संत जप कारी।

संत महिमा -

सुशील संत पूजते पुजात आप शाम सो
दुःखत संत दिल में दुःखात सुख धाम सो॥

संत की पूजा से भगवान की पूजा तथा संत को दुःख देने से भगवान को दुःख देने जैसा है।

चरन चलत ना दशहित हरि, हरिजन के पास,।
ताहि चरन बडवाई सम कहत वाल्मीकि व्यास॥

भक्त के विषय में बडा सुन्दर लिखा है -

संत जिमाई शाम को शैया पर करी शयन।
नयन कमल सकुचित किये योग नींद सुखदयन॥

गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी में गुजरात के प्रतिष्ठित कवि सुंदर इ.स. १९४०-४५ के समय अर्वाचीन कविता की रचना प्रारंभ किये थे। जिस में साधु अविनाशानंद का उल्लेख किया है। जिस में लिखा है कि आप की कविता बडी ही उच्च कोटि की है। आप श्रृगार की कितनी ही कवितायें लिखे हैं। दलपतराम स्वयं गृहस्थाश्रमी होते हुए

भी जिससे दूर भागते थे वे स्वयं श्रृंगार परक रचना किये थे जिस से संप्रदाय के ब्रह्मचारी साधु बडे प्रेम से गाते हैं। दृष्टांत स्म में अधोनिर्दिष्ट है

छेल छुओ न छतियो हमार
फटेगो मेरो अंचरवा।
लाख टके की लीनी सारी विहारी,
नागरनंदकुमार।
उज उतंग नहीं शाम चतुर पिया नाजुक
नविन लगार।
लोक नगर के देखे डगर में ढढे सबनर
नार॥

अविनाशानंद के गेल न की जो छोटी में अति अकुमार

स्वामी भले उग्र थे लेकिन उनकी कविता में बडी नम्रता थी एकबार कवि दलपतराम के पूछने पर काव्य की शैली में बोले -

भानु सम कवि ब्रह्ममुनि,
मुक्त प्रेम सखी जेम चंद।
अन्य कवि उडगण सम,
कहे अविनाशानन्द॥

ऐसे महाकवियों के विषय में लिखना हमारे लिये सूर्य को दीपक दिखाने जैसी वात है। अविनाशानंद जी का जन्म संवत १८९० में विरमगाव में हुआ था। फिर भी गोपालानंद स्वामी, शुकानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, आनंदानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी, भूमानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी इन सभी का साक्षात् दर्शन हुआ था। बडा तेजस्वी स्वस्म था। वैराग्य के प्रति मूर्ति थे। चारित्र्य निष्ठ थे। श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित मर्यादा का अक्षरशः पालन करते थे। संवत १९३९ में गाँव वरसोडा में अक्षरनिवासी हुए। झांझरी के किनारे जहाँ शरीर त्याग किये थे वही स्मरण स्थल के स्म में बनाया गया है। वहाँ के हरिभक्तों ने स्वामी के धाम में जाने के बाद ब्रह्मभोज किया था।

आगामी उत्सव

प.पू. पडे महाराजश्री का प्राकट्योत्सव

समस्त सत्संग को सहर्ष ज्ञात हो कि हम सभी के प्राण प्यारे विश्व वंदनीय प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ६२वाँ प्राकट्योत्सव चैत्र वद-३ ता. १६-४-२००६ रविवार के दिन श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ उपस्थिति में हजारो संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में धूम धाम से संपन्न होगा। समस्त सत्संग समाज को यह शुभ लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। *- महंत स्वामी*

इडर देश के लालोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का सुवर्ण जयंती महोत्सव

इडर देश के लालोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५० वर्ष पूर्ण होने से ता. २९-४-०६ से ५-५-०६ तक कथा पारायण-यज्ञ-सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सुवर्ण जयंती पाटोत्सव प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल परिवार की शुभ उपस्थिति में धूमधाम से संपन्न होगा। इडर देश के हरिभक्तों को यह दिव्य शुभ लाभ प्राप्त होगा।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोड (प्राचीन) इडर देश

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से इडर देश के अरोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के आंगन में ता. २६-४-०६ से ता. २-५-०६ तक कथा-पारायण-विष्णुयाग एवं ठाकुरजी का पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से धूमधाम से संपन्न होगा। इडर देश के हरिभक्तों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। *- महंत स्वामी, इडर*

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित भरने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवां भाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें। जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें।

सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी (पर्व-३)

- कनैयालाल अनिकेत

Man is known by the company he keeps. मनुष्य की कीमत उसके पुरुषार्थ से होती है। श्रीजी महाराज स्वयं निर्दोष, निर्दंभ है, निर्विषय, अनासक्त, निर्वासनिक तथा निर्विकार है इसकी झलक उनके आचरण से स्पष्ट होती है। वचनामृत में उन्होंने अपने भक्तों के विषय में कहा है कि हमें वह भक्त अच्छा लगता है जो निर्दम्भ होकर भजन-भक्ति करता है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। हमारी दृष्टि से वह दूर है जो दंभी है। अत: उस दंभी पर भक्त न होने के कारण कृपा दृष्टि नहीं रहती है।

वच. ११ वें में कहा है कि हमें ब्राह्मण, गरीब तथा भगवान के भक्त का जो द्रोह करे वह अच्छा नहीं लगता है। इस लोक में या परलोक में उसके साथ हमारा कोई संबन्ध नहीं।

श्रीजी महाराज तो सभी अवतार के अवतारी थे। वे भेंड का टोला एकत्रित नहीं किये। भींड एकत्रित करना कठिन नहीं है। बाघ का टोला नही होता। महाराज ने इस अवतार में भक्तों को मुमुक्षुओं को संत, परमहंसो को खूब तपाया है। वे लोग भी महाप्रभु की अग्निपरीक्षा में से पास भी हो गये हैं। दादा खाचर हो या कोई भी संत हो सभी को महाराज ने तपाया है। आज सत्संग में जो भी हैं वे सिंह ही हैं।

यहाँ वात करनी है ब्रह्मानंद स्वामी की ? ब्रह्मानंद स्वामी नरपुंगव थे, वीरता के प्रतीक थे, समर्पण के प्रति मूर्ति थे।

ब्रह्मानंद स्वामी की कविता मध्यकालीन युगानुसार है। भक्ति तथा ज्ञान दोनों से सम्पृक्त है। समय की दृष्टि से दयाराम की अपेक्षा पांच वर्ष बड़े थे। दयाराम के पूर्व ही अपनी जीवन लीला पूर्ण कर दिये थे। ब्रह्मानंद स्वामी में मध्यकालीन इतिहास की सम्पूर्ण झलक उनकी कविताओं से झलकती हैं। श्रृंगार-भक्ति संमृश्रित आपकी काव्य धारा थी। वैराग्य की सत्यता से परिपूरित ज्ञान भी ब्रह्मानंद स्वामी में था। परिणामत - ब्रह्मानंद स्वामी ज्ञान-वैराग्य की प्रति मूर्ति बनकर समाज में प्रतिष्ठित हुए थे। आपकी भावना कविता की मंजुल धारा बन बह पडी -

"आतन रंग पतंग सरीखो, जाता न लागे वारजी" तो

"छेला चालता गाजचाल, आवो मारे आंगणे।
हूं तो मोहीं छूं मोहनलाल, तोरे फूलडा तए ॥

यह एक झलक श्रीजी महाराज के बेये हुए बीज में प्रस्फुटित एक फूल जो सहजानंद स्वामी के शिरमोर थे।

हम ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन में दृष्टि करें तो - उनके पिता का नाम शंभुदान, माता का नाम लालुबादेवी था। पुत्र का नाम रखा लाडुदानजी। बाल्यावस्था से ही अलौकिक प्रतिभा, इस चारण परिवार पर तो मानो सरस्वती का वरदान ही था। शंभुदान गढवी को सम्पूर्ण पिंगल शास्त्र कंठ था। सारे भारत भर में एक स्थान पर पिंगल - डींगल का अभ्यास होता था वह था खाण गांव राजस्थान में शिरोही परगना। शिरोही परगना भुज राज्य के साथ संबन्धित था। शिरोही के राजा शंभुदान के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते थे। उसमें भी जब लाडुदान की पैदाइस हुई उस समय से विशेष प्रेम बढा-आदर बढा, क्योंकि लाडुदान की प्रखर प्रतिभा जिसे सम्पूर्ण पिंगल शास्त्र कंठ था। जो भविष्य में हीरो बनेगें यह जानकर शिरोही राज्य द्वारा लाडुदान के अभ्यास का सम्पूर्ण खर्च उठायेगा। लेकिन भुज अभ्यास के लिए कैसे भेंजा जाय, क्योंकि उस समय गमनागमन के साधन की कोई व्यवस्था नहीं थी। रण प्रदेश था। पैदल यात्रा करनी थी, अभी किसोर उम्र, मुसाफिरी कैसे करें ? लेकिन लाडुदान का हिसाब किताब तो भगवान स्वामिनारायण के पास जब था तो चिंता की बात नहीं थीं।

शंभुदान को एक रात्रि में स्वप्न आया, जिस में चारो तरफ प्रकाश ही प्रकाश है और एक दीपक भी जलता दिखाई दिया। जिसके बीच में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश आकर कहे लाडुदानजी तो महा मुक्तराज है। हमें सभी सदा इन के साथ हैं। आप इन्हें भुज भेंजिये। सरस्वती देवी इनका स्वयं राह देख रही है। साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं उनका साक्षात्कार करके लाडुदान कृपा पात्र बनेंगे। इन्हीं से अनेक जीवों का कल्याण होने वाला है। हमें भगवान की कृपा से ही लाडुदान की सेवा का अवसर मिला है। आज से पांचवे दिन एक कच्छी ब्राह्मण आपके घर आयेंगे उन्हीं के साथ आप लाडूदान को कच्छ भेज दीजिएगा।

आश्चर्य की बात यह कि यही स्वप्न लाडुदान की माता जी लाडुदेवी को भी आया। ऐसे ही स्वप्न का आभास स्वयं लाडुदान को भी हुआ। ईश्वरीय संकेत से सभी बडे आनंद में थे।

पांचवे दिन प्रातः अधेड उम्र का ब्राह्मण "सच्चिदान्द हरे" बोलते हुए शंभुदान के आंगन में खड़ा हो गया शंभुदानजी आंगन में खाट पर बैठे थे। वे तुरंत समझ गयें, खडे होकर चरण स्पर्श करके प्रणाम किये। जिस के मस्तक पर कच्छी पगड़ी थी। ब्रह्मतेज जिसका चमक रहा था। मस्तक पर चन्दन सुशोभित हो रहा था। गले में स्द्राक्ष की माला थी। स्कन्ध पर दुपट्टा लटक रहा था। धौतवस्त्र, कच्छी जूता, कच्छी पगड़ी इत्यादि को देखकर शंभुदानजी समझ गये कि ये कोई सामान्य ब्राह्मण नहीं है।

यथायोग्य सत्कार सन्मान करके योग्य आसन पर बैठाये। भूदेव आप का स्थान कहाँ है। मैं कच्छी हूँ। राजस्थान विचरण करने आया था। अब वापस कच्छ जा रहा हूँ। शंभुदानजीने बाहर खेलते हुए लाडुदान को बुलाकर प्रणाम करवाया, वे नीचे बैठने लगे तो उन्हें अपने पास बैठाया।

मेरा एक ही पुत्र है, पिंगल शास्त्र पढने के लिए भुज भेजना है, लेकिन किसके साथ भेंजे, कोई सहायक नहीं मिल रहा है।

मै सामुद्रिक शास्त्र भी जानता हूँ। आपके पुत्र के शारीरिक लक्षणों से यह ज्ञात होता है कि बडा भक्तराज तथा कविराज भी होगा। मैं भी भुज जारहा हूँ। मेरे साथ इन्हें भेंज दीजिये, रास्ते में कोई तकलीफ नहीं होगी। भुज में राज्याश्रम की व्यवस्था करादेंगे। आप निश्चिंत हो जाइये।

शंभुदान जी आनन्द में आ गये। लाडुदानजी को भुज भेंजने की तैयारी होने लगी। खुशी-खुशी सारे समाज के लोग एकत्रित होकर लाडुदानजी को विदाई करने आये। आवश्यक साधन सामग्री के साथ लाडुदानजी भूदेव के साथ प्रस्थान किये। खाण गाँव के नागरिक गाँव के बाहर तक विदाई करने आये। पिता शंभुदानजी बडे दुःख के साथ पुत्र मोह का त्याग करके घर की तरफ वापस आये.

भूदेवजी मानो लाडुदानजी के पूर्व परिचित हों, इस प्रकार की बाते करते हुए चल दिये। बनासनदी पार करके रोहा, पालनपुर, राधनपुर होकर मच्छु किनारे माणिया (मीयाण) गाँव आया। यहाँ से ही रण प्रदेश प्रारंभ हुआ, आगे आगे ब्राह्मण देवता पीछे पीछे लाडुदानजी चलने लगे।

रण का मार्ग बड़ा विकट था। फिर भी लाडुदान जी को कोई पीड़ा न हो यह ध्यान रखकर आगे चल रहे थे। देखते-देखते भुज का पहाड दिखाई दिया। जिसके पास से एकनदी बहती थी, उसी में दोनो स्नान किये। थोड़ा आराम किये। भोजन किये। इतने में भुजनगर से एक शेठ आया और प्रणाम करके पूछा, राजस्थान के खाण गाँव के शंभुदान के पुत्र पिंगल शास्त्र पढने आये है वे ही तो नहीं हैं ?

सही आपकी पहचान है। राज्य सरकार की तरफ से आ रहा हूँ। शिरोही से पत्र आगया है, उसी सन्दर्भ में मैं लेने आया हूँ। आप मेरे साथ चलिये लाडुदानजी को आनन्द के साथ आश्चर्य हुआ।

लाडुदानजी, सामने के गाँव में मैं जा रहा हूँ, आप शेठजी के साथ जाइये, चिन्ता मत करना, सभी व्यवस्था हो गयी है, यह घोडा भी लेजाइये। ब्राह्मण देवता इतना कहकर चले गये, थोडा दूर जाने पर पीछे देखे तो ब्राह्मण देवता अदृश्य हो गये। कारण यह कि भगवान की जहाँ व्यवस्था हो वहाँ तो अक्षरधाम के अनादिमुक्त जो कविराज, परमहंस हैं उनके लिये तो स्वयं महाराज ही सहायक बने, और आगे की व्यवस्था भी वही करेंगे - इसीलिए तो ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है -

छांड के घनश्याम औरको धरुं तो ध्यान।
फारिदारो छाति मोरी कठिन कुठार से॥

क्रमशः

श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका के संदर्भ में

श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका के जो भी सदस्य है(सभ्य) उन्हें सूचति किया जाता है कि "श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रतिमास की ११ ता. को आर.एस.ओ. सरसपुर से नियमति एकसाथ देश विदेश में सभी संदस्यो को भोजी जाती है। यदि कीसी कारण वस पत्रिका किसी सदस्य को न मिले तो वे अपने स्थानिक पोस्ट आफिस में या जहाँ अनुकूल हो वहाँ जानकारी प्राप्त करें। यहाँ के मंदिर से सभी के पते का ध्यान पूर्वक लेखा जोखा करके ही पत्रिका को प्रेषित किया जाता है।

किसी भी सदस्य को किसी कारण से पत्रिका न मिली हो और सूचित करेंगे तो अवश्य मासिक कार्यलय से प्रेषित की जायेगी।

महानिष्कामी मुकुन्दानन्द ब्रह्मचारी

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

मुकुन्दानंद ब्रह्मचारी मछीयाव के रहने वाले थे। उनका नाम मूलजीभाई था । बालकपन से यावत जीवन ब्रह्मचर्य पालन हेतु ब्रत ले लिये थे। यजमान वृत्तिथी जिसमें प्रेमालु स्वभाव के कारण सभी उनसे बहुत प्रेम करते थे। यजमान उनपर विश्वास करते थे।

जीवन में एक ऐसा प्रसंग बना जिससे वे घर छोड दिये, हुआ ऐसा कि किसी यजमान ने अपनी बेटी को मछियाव लाने के लिए मूलजीभाई से निवेदन किया। मूलजीभाई ने उसे लाने के लिए संमति देदी। वापस आते समय रात हो गयी तो एक स्थल पर स्कना पड़ा। बहन को भीतर सुता कर स्वयं बाहर सो गये । स्त्री के मन में मूलजीभाई की सुन्दरता देखकर विकार पैदा हो गया। वह स्त्री मूलजीभाई को सोते हुए जगाकर कही कि हमें डर लग रहा है इसलिए आप भी भीतर ही शयन करें। मूलजीभाई उसे समझा बुझाकर पुनः सुता दिये । लेकिन उस स्त्री ने पुनः चरित्र किया, अब मूलजीभाई उसके चरित्र को समझ गये थे । भगवान ने मेरे प्रण की रक्षा की है, इसलिये अब हम सदा भगवान की क्यों न भजन करें। संसार सदाके लिए छोड़कर भगवान की भजन के लिए एकदिन लोजगाव में रामानंद स्वामी को मिले। अन्त में रामानंद स्वामी के पास दीक्षा लेकर मुकुन्दानंद स्वामी के नाम से विख्यात हुए।



बाद में श्रीजी महाराज का सांनिध्य होने से उनका जीवन धन्य बन गया। श्रीजी महाराज की आज्ञा ही उनका जीवन था। श्रीजी महाराज यदा कदा उनकी कसौटी करते रहते फिर भी वे उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते थे। ब्रह्मचारी जी जाग्रत स्वप्न तथा सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं में श्रीजी महाराज का दर्शन करते रहते थे। प्रत्येक संत को आठ प्रकार का ब्रह्मचर्य पालने का नियम होता है । ब्रह्मचारी को संपूर्ण निर्विकार देखकर महाराज ने उन्हें स्त्रियों के साथ बातचीत करने की छूट करदी थी।

एक समय महाराज गढपुर से जेतलपुर जा रहे थे उस समय उनके वियोग में जीवुबा, लाडुबा, दोनो ने अन्न का त्याग कर दिया। उन्हे धैर्य बधाने के लिए श्रीहरिने ब्रह्मचारी को भेजा। श्रीजी महाराज के चरित्रों को सुनाकर ब्रह्मचारी ने उन्हें तृप्त किया। इसका उल्लेख वासुदेवानंद ब्रह्मचारी ने सत्संगिभूषण में किया है। इस प्रसंग पर मुक्तानंद स्वामी ने उद्धवगीता नामक महा प्रबन्ध लिखा है।

वडताल में मंदिर के पीछे वाले चौक में महाराज सभा करके बैठे हुए थे। ऊपर प्रदक्षिणा में ब्रह्मचारी खडे थे। उस समय महाराज ने पानी मांगा, तुरन्त ही ब्रह्मचारीश्री ऊपर से कूदकर पानी लाकर दिये। "महाराज ने कहा ब्रह्मचारी आप ऊपर से क्यों कूद गये ?" ब्रह्मचारी ने कहा, महाराज ! आप को पानी चाहिए, मैं यदि सीढी से उतर कर पानी लेने जाऊ तो बहुत समय लगे, इस लिए मैं कूद गया, अन्यथा रक्षा करने वाले तो आप ही हैं।

एक समय ब्रह्मचारी जी को सभा में बोलने के लिए कहा। ब्रह्मचारी ने बडे अद्‌भुत ढंग से विवेचन करते हुए कहा कि श्री स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि हैं। इनके जैसा कोई हुआ ही नहीं है। आगे होगा भी नहीं। इसलिए अपने इष्टदेव की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना । उनसे प्रतिपादित जो मर्यादा है उसी में रहना ए दो वाते बहुत आवश्यक हैं।

श्रीजी महाराज ने बडी प्रसन्नता के साथ कहा कि ब्रह्मचारी ने बहुत उत्तम वात कही है। वचनामृत में भी श्री मुकुन्दानन्द ब्रह्मचारी का उल्लेख दृश्यमान होता है। शिक्षापत्री में स्वयं श्रीहरिने चौथे श्लोक में स्थान देकर अमरत्व को प्राप्त करा दिया है।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सम्पूर्ण जिन्दगी लाली जैसी ?

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

मित्रो ! यह लेख शांति से पहले वांचलो, बाद में विचार करना । एक गृहस्थ को कोई संतान नहीं थी । खूब पूजा-पाठ किये, भगवान प्रसन्न होकर एक पुत्री दिये । पुत्री की प्राप्ति के बाद खूब आनंद मनाये । उसके साथ अति स्नेह करने लगे । इतना अधिक प्रेम बढा कि लालन-पालन में पुत्री के दो वर्ष होने पर भी जमीन पर चलने नहीं देते, गोद में लेकर चलते । लोग सलाह देते कि अब दो वर्ष की हो गयी इसे पग से चलने दीजिए, व्यायाम होगा । लेकिन इतना अधिक प्रेम लालन-पालन करने लगे कि उसका नाम लाली रख दिये ।

रात दिन लाली-लाली की रट लगाये रहते थे । लाली के सामने ही देखते रहते थे । लाली हंस रही है, लाली आज क्या खाई ? लाली कितना खाई ? लाली को खिलाने के लिए ठेले के पास ले जाते । नाना भांति के व्यंजन को या उसके अनुकूल व्यंजन को खिलाते थे । नमक-मिर्चा, मसाला, तेल में तली वस्तु ही उसे पसन्द आती थी । इसमें शुद्धता कहाँ से होगी जो सड़क की चीज हो वह खुली होगी, जिसके खाने से नाना प्रकार के रोग होगें ।

उसलाली को ठेले का व्यंजन ही अब अच्छा लगने लगा । दही बाडा, दाबेली, समोसा, फुल्की (पानी-पुड़ी) इत्यादि चटपटे चीजों में उसकी जीभ हो गयी । लाली का इस प्रकार का लालन पालन हो गया कि ठेले की वस्तु को मांगती । लोग उसे उठाकर ले जाते और खिलाते, कारण क्या था ? अधिक स्नेह जहाँ होता है वहाँ विवेक नहीं रहता । बालक तो मांगता ही है, बालक अज्ञानी है, वह तो मांगेगा ही । मांगने के अनुसार देते रहेंगे तो परिणाम क्या आयेगा ? लाली रोगी हो गयी, इसमें क्या कारण ? सडा-गला चटपटा वस्तु मांगती, जिद करती, माप से अधिक खाती, इन्हीं कई कारणों से धीरे धीरे भीतर उसको रोगो ने घेर लिया । यह अधिक स्नेह का परिणाम है । विवेक उसमें नहीं है लेकिन आपमें विवेक तो होना चाहिए । कभी तो कहना चाहिए बहुत खायेगां तो दुःखी होगा, परेशान होगा, शरीर में रोग होगा इत्यादि पहले से कहे होते तो यह स्थिति नहीं होती, आप कहने जाओंगे तो लोग कहेंगे कि पैसे की चिन्ता है बिचारी ..... लाली को देखो रो रही है, इसे खाने नहीं दे रहे हैं । ले जाइये इसे इच्छित वस्तु खिलाये । इस प्रकार करते उसके आठ वर्ष बीत गये । परिणामतः वह एक दिन बहुत बिमार हो गयी ।

दश वर्ष की हुई तो उसके लिये नाना विध आभूषण बनवाया । रात-दिन लाली-लाली की रट, लेकिन लाली बिमार पडी और आमाशय खराब हो गया । दवा चालू हो गयी । दवा लाभ नहीं कर रही थी, एक दिन वह चल वशी । बाद में तो रोना ही रहा । फिर भी मरने के बाद एक ही रटन मेरी लाली स्वर्ग में होगी । स्वर्ग में क्या करती होगी ? स्वर्ग में उसे कौन खिलाता होगा ? स्वर्ग में ठेला वाला होगा या नहीं ? स्वर्ग में उसे मन के अनुकूल समोसा मिलता होगा या नहीं ? सम्पूर्ण दिन केवल लाली और स्वर्ग की बात । इसकी जानकारी एक ठग को हुइ । ठगने वाला बहुत चालाक होता है । वह ब्राह्मण का वेश बनाया । यद्यपि ठग विद्या का काम न जानता है न करता है, लेकिन यह तो ठग ही था । चन्दन लगाया, मोटी माला पहना, धोती पहना और पहुंच गया उस गृहस्थ के घर । मैं आप को एक बात बताने आया हूँ । मैं आज रात में स्वप्न देखा हूँ । स्वप्न में मैं स्वर्ग गया था, मुझे पिताजी मिले थे, वे कहने लगे अब तो स्वर्ग में आनंद ही आनंद है, कारण यह कि स्वर्ग में एक आठ-दश वर्ष लडकी आयी है । वह खूब दौडा दौडी करती है, किलकारी मारती है । लेकिन बेचारी बहुत दुःखी है, कारण यह कि उसका स्वर्णाभरण घर रह गया है जिसे बार-बार याद करती रहती है । बार-बार ऐसा कहती है - कानका, गला का, हाथ का, अंगुली का, इन सभी का याद करके बहुत रोती है । यही बात आप को कहने आया हूँ कि बाबूजी मुझे सपना में कहकर गये जो आप से मैंने कह दिया । आप मुझे देदीजिए मैं बाबूजी के माध्यम से भेंजवा दूंगा ऐसा कहने नहीं आया था । नहीं, तो फिर कहाँ हम दूसरा पंडित खोजने जायेगें । ऐसा करिये आप ही आभूषण लेजाइये और पिताजी के साथ स्वर्ग भेंजवा दीजिए ? अच्छा जब आप कह ही रहे है तो ऐसा ही करता हूँ । उनके सभी आभूषण लेलिया और कहा कि आप लोग चिंता मत करना । यह आभूषण स्वर्ग में लाली को मिल जायेगा, और लाली प्रसन्न भी हो जायेगी । वह ठग अलंकार सभी पोटली बांधकर चल दिया ।

उसी समय उस गृहस्थ के घर एकमित्र आया गृहस्थ के मुखाकृति को देखकर कहने लगा बडे प्रसन्न हो। तब गृहस्थ ने ब्राह्मण को स्वर्गस्थ लाली के लिए जो आभूषण दिया वह सब बता दिया। यह सुनते ही उसने कहा लाली को मरे एक महीने हो गया। क्या सभी गहने उसे देदिये - हाँ सभी देदिये। एक भूदेव आये थे, ऐशा कोई भूदेव नहीं जो लाली को स्वर्ग में आभूषण देने जाये। जो स्वर्गवासी होता है वही स्वर्ग जा सकता है। अरे भाई ! आप तो ठगे जा चुके हैं। ना.... ना..... आप जल्दी जाइये आप को ढग लिया है। आभूषण वापस लाइए। वह अभी नजदीक में ही होगा। इधर गृहस्थ घोडा की सवारी करके बडी तेजी से उसके पीछे दौडाते हुए गया, जब गृहस्थ को आते ठग ने देखा तो समझगया कि इधर ही आ रहा है। इस लिये वृक्ष पर चढ गया। वहाँ ही घोडा को खडा किया और ललकारते हुए बोला कि चलो नीचे उतरो, तुम ठग हो, आभूषण लेकर ठगे हो। तब ठगने कहा कि मैं स्वर्ग में भेंजने की यह विधि कर रहा हूँ, यदि आपको विश्वास नहीं हो तो आप भी इस वृक्ष पर चढ आओ।

वह भोला गृहस्थ वृक्ष पर चढा। गृहस्थ ज्यों वृक्ष पर चढा त्यों वह ठग सोना का पोटला लेकर नीचे कूदा और घोडा पर सवार होकर तीव्र गति से भाग खडा हुआ। निराश होकर वह गृहस्थ वापस घर आया। खाली हाथ आया देखकर पत्नी ने कहा क्या हुआ ? क्या होगा ? वह तो चला गया। अरें ..... वह आभूषण लाली लेगयी तो घोड़ा कहाँ गया ? घोडा भी लाली के लिए अर्पित हो गया।

प्रिय भक्तों ! सावधान रहना अन्यथा लाली की तरह सम्पूर्ण जिन्दगी चली जायेगी। तो भी खबर नहीं पडेगी। लाली अर्थात् माया। माया की चिंता में भजन भक्ति न चली जाय। माया को पहचानना आवश्यक है। प्रथम के पहले ही वचनामृत में स्वामिनारायण भगवानने कहा है कि भगवान की भजन में जो बाधक बने वही माया है। वही लाली है, इसमें जीवन का कल्याण समाप्त न हो जाय इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

उपदेश छोटा फायदा बडा

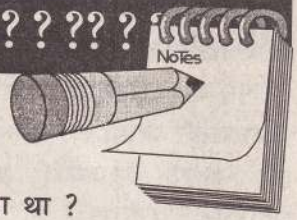
- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

शिक्षापत्री प्रितदिन पठन करते ही होंगे, भगवान श्री स्वामिनारायण ने एक वात कही है कि नित्य प्रति भगवान के मंदिर में जाना, मंदिर में जाकर "कार्यं तस्य कथावार्ता श्रव्याश्च परमादरात्"। भगवान की कथावार्ता करना तथा सुनना। भगवान की कथा का बहुत माहात्म्य है। उसमें भी संत के मुख से सुनीजाय तथा उसे जीवन में उतारा जाय तो निश्चित ही बेडा पार हो जायेगा। एक शेठ नित्य मंदिर में कथावार्ता सुनने का नियम रखा प्रतिदिन प्रातः मंदिर में कथा सुनने के लिये विना आलस्य के पहुंच जाता था। वह ऐसा मानता था कि ऐसे संत के मुख से इतना सुन्दर शास्त्र अपने जीवन में सुनने के लिए मिले यही बडी भाग्य है। बड़े ध्यान से कथा सुनता।

एक दिन की घटना है प्रतिदिन की तरह प्रातः कथा सुनने आया। उस समय संत कथा में प्रसंगानुसार बताये कि शास्त्र में जो भी उपदेश हैं वे सभी लाख-लाख रुपये की कीमत के है। उसमें से यह एक उपदेश याद रखने योग्य है - "कभी भी एकाकी मुसाफिरी नहीं करना, कभी मार्ग में अकेला गमन नहीं करना। शेठ को हुआ कि संत का उपदेश किस आधार पर एकलाख का हो सकता है, हमारा तो धंधा ही ऐसा है जो अकेला ही जाना पडता है, फिर भी संत की वाणी सुने है तो देखता हूँ किस को साथ लेजाऊ। शेठ घर आये अपने काम काज के विषय में विचार करने लगे। आज कहाँ जाना है, आज किस व्यापारी के यहाँ उघरानी करना है। यह सब विचार कर निकल पडे लेकिन रास्ते में कथा की बात को यदा करते जा रहे हैं कभी अकेला नहीं चलना चाहिए। थोड़ा आगे बढे ही थे कि एक शेढवा नामक जीवपर दृष्टिपडी, उसीको साथ में लेलिये, अपने थैले में रखकर आगे बढे। थोडी दूर जाने पर एक घटादार पीपलका वृक्ष आया जिसके नीचे आराम करने लगे। उसी समय उन्हे गहरी नींद आ गयी। उनके थैले से वह जीव बाहर निकलजाता है। उस समय उस पीपल वृक्ष के नीचे सर्प की बिलथी जिसके नजदीक में ही शेठजी गहरी नींद में सो रहे थे। बिल के बाहर सांप निकला और शेठ की तरफ ज्यों बढा त्यों शेठजी के थैले से निकला वह शेढवा जीव शर्प की पूंछ को मुह में दबाया सर्पने भी उसे दंश मारा कि शेढवा के तीक्ष्ण कांटे उसके मुख को छोल डाले, परिणामत, सर्प की मृत्यु हो गयी। जब शेठ जग कर देखता है कि मेरे पास सर्प मरा हुआ है। वे कथा के वाक्य स्मरण हो आये कि स्वामीजीने एक लाख की ही बात की थी लेकिन हमारे लिये तो करोडो की हुई। जो भी श्रद्धा से, विश्वास से, शास्त्र की बात को ध्यान देंगे, जीवनमें उतारेंगे उनका जीवन शेठजी की तरह बच जायेगा।

प्रिय भक्तो ! हमारे लिये स्वामिनारायण भगवान द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री तथा सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, वचनामृत इत्यादि शास्त्रों में भगवानने जो आज्ञा की है उसकी श्रद्धा से श्रवण करेंगे तथा जीवन में उतारेंगे तो अवश्य सुखी होंगे।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ किसी राजा की रानी को एक ही रात्रि में श्रीजी महाराजने कहाँ पहुंचा दिया था ?

प्रश्न : २ उद्धव सम्प्रदाय के प्रथम प्रेरक कौन थे ?

प्रश्न : ३ सात चिरंजीवियों के नाम लिखिये ?

प्रश्न : ४ चार सनकादिकों के नाम लिखिये ?

प्रश्न : ५ दश अद्रव्य क्या है ?

प्रश्न : ६ अवतारी कौन है ?

प्रश्न : ७ सायंकाल किसे जानना ?

मार्च २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) वि.स. १८५५ में तपस्वी के वेष में कांकरिया सरोवर के ऊपर पधारे थे । (२) बडोल गाँव में हुआ था (मूलीदेश ता. लींबडी, जि. सुरेन्द्रनगर) (३) जेतलपुर-वडताल । (४) होज कुतुबी था । (कुतुब का होज) (५) दैत्यगुरु विश्वस्र को गुरु बनाये । इन्द्र उनका बध किये । इन्द्र ब्रह्म हत्या का चार भाग किया । १. पृथ्वी, २. जल, ३. वृक्ष, ४. स्त्री । (६) आदरज गाँव में १. स.गु. मुक्तानंद स्वामी, २. स.गु. नित्यानंद स्वामी, ३. स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी, ४. स.गु. शामळीया चैतन्यानंद स्वामी । (७) ईडर गाँव के राजा ने गुरु चरणरतानंद स्वामी ने कंठी बांधी थी ।

१. अंजना बहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
२. पटेल कैलासबहन विष्णुभाई (नांदोल)
३. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
४. सांख्ययोगी कोकिलाबा शिष्य मंडल (सुरेन्दनगर)
५. पटेल गीता बहन बलदेवभाई (सुरेन्द्रनगर)
६. पटेल जयेश बी. (टर्फ स्कुल)
७. पटेल बीना बहन हिरेनभाई (अमहमदाबाद)
८. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार (चांदलोडिया)
९. विणाबहन रतीलाल भावसार (अहमदाबाद)
१०. गोरधनभाई आर. वाघेला (जामसर)
११. शिंगणा गीताबहन रमेशभाई (बापूनगर)
१२. स्वामिनारायण मंदिर (हर्षद-बूपनगर)
१३. काछडिया राधिका (अडताला)
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनोका (मोखासण)
१५. उर्मिलाबहन, कल्पनाबहन (नवावाडज)
१६. महिला मंडळ (नवावाडज)
१७. साकरबहन नटवरभाई (नांदोल)
१८. विमलाबहन कनुभाई (कनीपुर)
१९. सुभद्राबहन रमेसभाई (कनीपुर)
२०. संचनबहन बाबूभाई (रतनपर-मूली)
२१. सां.यो. कंचनबा, सां.यो. कुन्दबा (मेडा-कच्छ)
२२. पुजारी जगदीश भगत (मोखासण)
२३. कोठारी हितल रमेशभाई (मेमनगर)
२४. पटेल गोरदनभाई शंकरभाई (सोजा)
२५. अमृतलाल के. मोदी (हिंमतनगर)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद का आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ?

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलाहाबाद (प्रयागराज)
संपर्क के लिए फोन नम्बर बदल गया है (०५३२) २२५६०३२ (मो.) ०९४१५३०६८८९

।। भक्तिसुधा ।।

अहमदाबाद मंदिर बहनो के मंदिर में चैत्र शुक्क्ल ११ से प्रति एकादशी को सत्संग सभा के सन्दर्भ में परम पूज्या अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा श्री गीदावालाकी शुभ आज्ञा से बहनो को सत्संग का विशेष लाभ मिले तथा युवती बहनो में सत्संग की जागृति आवे, जिसके लिये चैत्र शुक्ल ११ से प्रति एकादशी को दोपहर २ से ४ बजे तक कथा वार्ता-धुनि-भजन इत्यादि का कार्यक्रम होगा। सभी बहनें सत्संग का अवश्य लाभ लें। अहमदाबाद शहर तथा ग्राम्य विस्तार में सत्संगी बहनों को ऐसी सभा का आयोजन करने की इच्छा हो तो वे एक मास पूर्व हवेली में अपने विस्तार का पूरा पता, फोन लिरववाने का कष्ट करें।

●

मूर्ति

- सांख्ययोगी शांताबा (हवेली)
अमदावाद

सर्व अवतारों के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान शास्त्र प्रमाणानुसार सदा मूर्ति में प्रगट विराजमान रहते हैं। जो सत्संग समाज के लिए रोकडा रुप में है, उधार की तो बात ही नहीं है। भगवान में एकाधार वृत्ति रहे तो स्वयं श्रीहरिकी कृपा स्वयं बनी रहेगी इसमें संदेह का स्थान नहीं है। इसी जन्म में चरितार्थ कर लेना चाहिए, अन्यथा लाखो जन्म तक भटकना ही पडेगा। जप-तप करते रहे तो भी आज जो सत्संग मिला है वह पुनः नहीं मिलेगा। इसलिए अन्तर्वृति करके भगवान की मूर्ति में ध्यानस्थ होजाना चाहिए। इसमूर्ति में तथा अक्षरधाम की मूर्ति में जरा भी अन्तर नहीं है। इसलिए मूर्ति में प्रत्यक्ष भाव रखकर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। सत्संग में ममत्व रखना चाहिए। किसी का द्रोह न हो, किसी का अपराध नहो क्योंकि इस लोक में अधिक रहना नहीं है। इसलिये सत्संग करलेना चाहिए। बडे-बडे संत एक क्षण के लिए महाराज की मूर्ति से ध्यान अलग नहीं रखते थे। उदाहरण के लिए जैसे दुर्वासा ऋषि गोपियों का भोजन जिम गये, फिर भी उपवासी ही कहलाये। यमुनाजीने मार्ग दिया, गोवर्धन को धारण किया। किसी भी क्रिया को करे उसी में महा प्रभु की मूर्ति का सतत ध्यान आवश्यक है। धुनि- कीर्तन करते हुए जगत से वृत्ति को हटाकर भगवान में लगाना ही मोक्ष को देनेवाला है।

●

चिन्ह तिल ध्यान

- सांख्ययोगी सूरजबा (वावोल)

भगवान की मूर्ति का ध्यान बावन चिन्ह १६ दोनो चरण के चिन्ह -१। दाहिने चरण के अंगूठे में श्याम चिन्ह-२। बाये चरण के तलुये में बाई तरफ १०। अंगुली के ऊपर रोम चिन्ह-२। खडाऊ का-२। घुट्ठी ऊपर-१। श्रोणी के उपर चिन्ह-२। धोती से घिसा चिन्ह-२। कमर में १। उदर में २। हृदय में वत्स का १। छाती में पांच तसुका श्याम चिन्ह-२। स्तन ऊपर-२। हाथ के मूल में २। नासिका के ऊपर चिन्ह-१। दाहिने मणिबन्ध में १। बायें कान पर १। जीभ ऊपर श्याम चिन्ह। इस प्रकार कुंल ५२ चिन्ह का ध्यान करने से बहुत आनंद होता है।

६३ तिल - दाहिने अंगूठे के बाहर-१। दाहीने पग के अंगूठे के पास की अंगुली में १। दाहिने पग की अंतिम अंगुली में १। दाहिने पग के घुटने में १ तिल। बांये पग घुटंने के ऊपर १ तिल। उस से ऊपर एक तिल। नाभी के दाहिनी तरफ १ तिल। बांई तरफ १ तिल। नाभी ऊपर तीन तिल। उससे उपर १ तिल। बांये कुक्ष में एक तिल बाहर की तरफ चार तिल। दाहिनी तरह कुक्ष में १ बडा तिल। दाहिने स्तन के ऊपर १ तिल। बांये स्तन के ऊपर १ तिल। दाहिनी भुजा के बाहर ४ तिल। दाहिने हाथ की कुहिनी में २ तिल। दाहिने हाथ के कानी ऊंगली में १ तिल। मूल में २ तिल। बांये हाथ के मूल में १ तिल। तर्जनी अंगुली में १ ति। मणिबन्ध में १ तिल। कंठ के ऊपर ३ तिल। वाये स्कंध पर ३ तिल कमर में १ तिल। उससे ऊपर १ तिल। दाहिनी नासिका के ऊपर १ तिल। दाहीनी आंख के उपर १ तिल। दाहिने कान के ऊपर १ तिल। तलवे में १ तिल। शिखा के नीचे १ तिल। शिखा के दाहिनी तरफ ३ तिल। इस प्रकार महाराज के सम्पूर्ण शरीर पर चिन्ह तथा ६२ तिल का ध्यान किया जाय तो वासना का मूल से नाश हो जायेगा। मूर्ति का अखंड ध्यान होता रहेगा।

●

सहजानन्दी मीरा

हे भक्तों! सौराष्ट्र में भेंस जाण नाम का गाँव है। वहाँ करणुभा नाम के एक भक्त थे। उनकी एक बहत थी। उसका नाम मीराबा था। मीराबाई की तरह हर समय भक्ति रस में डूबी रहती थी।

कुछ समय बीतने पर उनका विवाह कुसंगी के साथ निश्चित किया। करणुभा

को खबर थी फिर भी विवाह करना चाहते थे। कुछ लोगों ने मना किया कि आपकी बहन भक्त है किसी सत्संगी के साथ विवाह योग्य होगा। करणुभाई ने कहा बरराजा बडे धनवान है, राजा रजवाडा जैसी व्यवस्था है। स्मवान भी हैं। केवल व्यसनी हैं एक यही कमी है। जब मीरा ससुर गृहजायेगी तो सुधारदेगी।

इस प्रकार उत्तर देकर विवाह निश्चित कर दिया और करभी दिया। बाद में जब मीरा पति गृह गयी तो देखा कि यहाँ तो महफिल लगी है। मेरे भाई ने यहाँ क्यों विवाह किया। मेरे सशुराल वाले कुसंगी है। अफसोस करते हुए शयन खंड में गई। रात्रि में नशा में धुत पति आया और कहने लगा कि मीरा ले.... ले.... ले मेरे हाथ में प्रेम का प्याला। मीरा स्पष्ट ना कर दी। पति को क्रोध आगया। वहीं से दोनों में राग-द्वेष प्रारंभ हो गया। वह जबरदस्ती उसे मंदिरा पिलाना चाहता था, वह नहीं पीना - चाहती थी, जब उसके मुख में जबरदस्ती से डालना चाहा तो हाथ से छूटकर दूसरे रुम में जाकर भीतर से बन्द करली। और भगवान की मूर्ति के सामने रोते हुए प्रार्थना करने लगी। इस प्रकार विना अन्नजल के तीन दिन बीत गया। इस प्रकार की दृढता एवं भक्ति देखकर श्रीहरि प्रगट हुए, उसके ऊपर हाथ फेरते हुए कहने लगे कि तुम्हारे दुःख से हम बहुत दुःखी है, तूं भोजन करले, अब बता तुम्हारी क्या इच्छा है। मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हूँ। मेरे लिये तुम इतना दुःख उठाई हो। इसलिये तुम्हारी जो इच्छा हो मांगले तुरत मीरा बहनने मांगा, हे प्रभु ! इस यमपुरी जैसे घर में मुझे नहीं रहना है। आप अपने धाम में ले चलिये। तुरत भौतिक देह का त्याग कराकर दिव्य देह धारण कराकर श्रीहरि अक्षरधाम में ले गये।

इसके बाद श्रीहरि ने भेंशजाण जाकर करणुभा को रात्रि में दर्शन देकर क्रोधित होकर कहने लगे, हे करणुभा ! आप यहाँ सुख से आराम करते हो, परंतु तुम्हारी बहन की क्या हालत हुई जानते हो ? एक शराबी के साथ अपनी बहन का विवाह कर दिया। तुम्हे सत्संग में कोई लडका नहीं मिला। सत्संगी को छोड़कर कुसंगी के साथ विवाह कर दिया। कभी उसकी जिन्दगी के विषय में विचार किया ?

इस प्रकार श्रीहरि क्रोधायमान होकर बोल रहे थे, जिसे सुनकर करणुभा आवाक् हो गया था। बाद में प्रभु के चरण में गिरकर माफी मांगने लगा। तब श्रीहरिने कहा तुम्हारी बहन को मैं अपने धाम में ले गया हूँ। अब उसके ससुर गृह नहीं जाना। इतना कहकर श्रीहरि अन्तर्ध्यान हो गये। बाद में करणुभा को पश्चात्ताप होने लगा।

•

भगवान का मंगलकारी यत्रि

- रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

अनपे परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ने मणियोर गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पर कहा था कि जगत के सभी सुखो में दुःख होता है। जैसे कोई बडी गाडी में खर्चा भी बडा होता है। हम ट्रेन में सफर करतें हैं तो वह भी किसी की पहचान से। जो कोई गाँधीनगर सचिवालय में अच्छी पोस्ट पर होता है तो उसका पता प्राप्त कर लेंते हैं। क्योंकि किसी समय हमे वह उपयोगी हो सकता है। जबकि आज इस गांव में मंदिर बनवाकर मूर्ति प्रतिष्ठा की है तो श्रीजी महाराज का समाचार प्रत्येक दिन पूछना हैं। वे तो मोक्ष के दानी हैं राजाधिराज है। प्रत्येक क्षण वे आपका ध्यान रखेंगे।

श्रीजी महाराज ने वचनामृत प्रथम ७३ में नित्यानंद स्वामी के प्रश्न के उत्तर में कहा है कि हमारे स्वभाव को, हमारे साथ जो रहता है वही जान सकता है। जो दूर रहता है वह हमारे स्वभाव को नहीं पहचान सकता। मुकुंद ब्रह्मचारी भोले हैं। तो भी हमारे स्वभाव को जानते है "महाराज तो आकाश की तरह निर्लेप हैं। इनको अपना और पराया कोई नहीं है। इस प्रकार जो हमारे स्वभाव को जानता है वह जैसा ईश्वर में गुण हो वैसा ही ब्रह्मचारी में व्यवहृत होता है।

इसलिए बडे महापुरुषों में जो निर्दोष बुद्धि रखतें है उनके भीतर से सभी दोष निकल जाता है। यदि दोष देखने की भावना होगी तो कामादिक शत्रु सभी आकर निवास करेंगे। इसलिए सज्जन पुरुष में दोष का भाव नहीं रखना चाहिए। ऐसे व्यक्ति चाहे जितना सत्संग करें दुःख छूटता नहीं है।

वच. प्र. ७८ वें में शिवानन्द स्वामी ने प्रश्न किया कि जिसे भगवान में अचल निश्चय हो उसे हम कैसे जान सकते हैं ? महाराज ने कहा "जिन्हे अचल निश्चय हो उस पर भगवान सदाकल्याण कारी होते है। वह सभी पक्ष में आनन्दित रहते है जिनपर प्रभु की कृपा होती है। निश्चय वाले भक्त पर प्रभु की सभी क्रियायें कल्याण कारी होती है। ऐसा भक्त जब बोलता है तब परिपक्व की स्थिति में बोलता है।

कालयवन मथुरा को घेर लिया। श्रीकृष्ण उसे मारना चाहते है लेकिन उसे महादेव का वरदान था। इसलिए श्रीकृष्ण से मर सकता नहीं था। श्रीकृष्णने चरित्र किया। युद्धस्थल से वे भागने लगे, उनके पीछे-पीछे कालयवन होलिया। श्रीकृष्ण को अपमानजनक शब्द बोलते हुए पीछा करने लगा। भगवान गुफा में जाकर छिप गये। कालयवन भी भीतर प्रेवश किया। वहाँ एक दूसरे पुरुष को शयन करते हुए देखा। उसे ऐसा हुआ की श्रीकृष्ण यहाँ आकर किसी पुरुष की तरह सो गये हैं। वह मूर्खता से शयन

किये पुरुष पर चरण प्रहार किया जो बहुत समय से सो रहे थे, चरण प्रहार से जगे आंख मीजते हुए दिशाओं में देखने लगे । जब बगल में खडे उस कालयवन पर दृष्टि पडी तो उसकी शरीर में स्वयं अग्नि प्रज्वलित हो गयी और वह क्षण भर में जलकर राख हो गया ।

जिनकी दृष्टि मात्र से कालयवन जल गया । वे मांधाता राजा के पुत्र मुचुकन्द थे । ब्राह्मणों के भक्त, सत्यप्रतिज्ञ थे । पूर्व में असुरों के त्रास से रक्षण हेतु इन्द्रादिदेव मुचुकुंद के पास आये, वे इन्द्रादि देवों की बहुत कालतक रक्षण किये । जिससे देवता लोग उनके ऊपर प्रसन्न होकर जाने को कहे, मनुष्यलोक में निष्कंटक राज्य परित्याग करके हम सभी का रक्षण किये, आपने सभी विषयों का त्याग किया है । आपके राज्य में प्रजा, पुत्र, रानी, ज्ञातिबान्धव, मंत्री इत्यादिक कुछ अवशेष रहा नहीं है । उन सभी का काल ने नाश किया है । काल की अपेक्षा धर्मबलवान है, अविनाशी तथा सर्वनियन्ता भगवान ही एक मात्र नित्य हैं । हे राजन् मोक्ष के सिवाय कुछ भी मांग सकते हैं । मोक्ष के स्वामी तो मात्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान नारायण हैं । देवताओं की ऐसी वाणी सुनकर राजा मुचुकुन्द संग्राम से थकने के कारण आराम करने के लिए निद्रा मांग लिये और कहे कि हे देव ? मेरे शयन में जो विघ्न करे वह भस्मीभूत हो जाय । उसी कारण से कालयवन भष्म हो गया । बाद में भगवान श्रीकृष्णने राजामुचुकुन्द को दर्शन दिया और कहा कि हमारे तेज से इस कालयवन को आप ने जलाया है । आपके ऊपर कृपा करने के लिए इस गुफा में आया हूँ । पूर्व में आपने हमारी खूब उपासना की है । जो मेरी शरण आता है उसे शोक का अवसर नहीं रहता । इसप्रकार महादेव का वरदान सिद्ध करने के लिए कालयवन को स्वयं नहीं मारे अर्थात् भागे और राजामुचुकुन्द को देवों का वरदान सिद्ध करने के लिए मोक्ष दिये । महाराज चाहे जैसी भी क्रिया करें वह सब कल्याण कारी ही होती है । ऐसा जो समझता है वह अचल निष्ठावाला कहा जायेगा । ऐसी जिसकी निष्ठा होगी वह कभी डिगेगा नहीं ।

आदि मध्य, अंत में जो भी बड़ा हुआ है, सभी प्रगट प्रभु की आज्ञा का पालन करके बडा बना है, फिरभी बड़े तो मात्र प्रभु ही हैं । जो उनकी आज्ञा में रहता है वही मोक्षका अधिकारी है । जो प्रभु की आज्ञा का लोप करेगा वह चाहे कितना बड़ा होगा उसका बडप्पन टिकेगा नही । स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है -

मोटा गणाणा ते मानवुं,
कर्युं गमतुं जेणे गोविंद तणु
ते विना मोटप नव मळे,
फरी परी शुं कहिए धणुं ।
(वचविधि कडवुं ३)

●

दूध से अधिक मीठी छाछ

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

भाडेर नामक एक गाँव है । एकबार महाराज भाडेर गांव में पदार्पण किये । गाँव में पाताल भाई नाम के निष्ठावान हरिभक्त रहते थे । महाराज के प्रति खूबनिष्ठा हो गई । "महाराज उस गाँव में पधारे । बडे-बडे काठी, दरबार सभी घर स्के हुए हैं । हमारी इतनी भाग्य कहाँ कि महाराज हमारे यहाँ पधारे ।" इतने में दूसरे दिन महाराज प्रातः काल ही पातलभाई के घर पहुंच गये । पति पत्नि दोनो महाराज को देखकर आनन्द मेंनहीं समारही थी । खाट विछाकर गद्दा तकिया लगाकर महाराज को बैठाया । स्वागत में पातलभाई की पत्नी दूध ले आयी । पीते-पीते महाराज ने कहा यह दूध तो बहुत मीठा है । इसमें शक्कर डाली है क्या ? और लाओ मुझे खूब भूख लगी है । यह घर के भैंस का दूध है । और पीजिए महाराज ? ऐसा कहते हुए पातलभाई की पत्नीने गिलाश भर दिया ।

महाराज तीनबार मांगकर पीये । महाराज को तृप्ति का अनुभव हुआ और पति पत्नी को आनन्द की अनुभूति हुई ।

पातालभाई की पत्नी अन्य हरिभक्तों के लिए छाछ लेने अन्दर गयीं । छाछ के घड़े का मुख खोली तो वह दूध लगा । उन्हे शंका हुई कि कही मैं महाराज को दूध की जगह छाछ तो नहीं पिलादी । दूध तो यहीं पड़ा है । उन्हें बहुत दुःख हुआ । वे पश्चाताप करने लगी । बाहर आकर रोते हुए महाराज से मांफी मांगने लगी ।

महाराज ! भूल से मैंने आपको छाछ पिला दिया । दूध तो अन्दर रह गया है । मेरा अपराध मांफ करें महाराज ?

महाराज मंद मुश्कान के साथ बोले : दुःखित मत हो वह दूध ही था । आपने इतने प्रेम से छाछ को पिलाया कि दूध से भी अधिक मीठी लगी । हमें तो भाव मीठा लगता है । इसमें दुःख की बात नहीं है ।

इस प्रकार आश्वासन देकर दोनों को आशीर्वाद दिये । पति पत्नी दोनो महाराज के चरण पर गिर गयी और कहने लगीं कि महाराज अंतकाल में भी इसी स्थ में लेने आइएगा ।

सांसारिक व्यवहार गरीब था फिर भी मांगा तो अंत में मोक्ष । भगवान ने भी तथास्तु कहकर आशीर्वाद दिया ।

इस प्रकार दोनों को प्रसन्न करके महाराज मोड गाँव जाने के लिए निकल पडे ।

दोनो पति पत्नी महाराज के स्वस्थ को जब तक आंखो से ओझल नहीं हुए तब तक अपने हृदय में उतारते रहे । निहारते रहे, दृष्टि लगाये रहे ।

महाराज आंखों से जब ओझल हो गये तब घर में आये । दोनो के हृदय में महाराज अलैकिक आनंद विखेर कर चले गये जिसे वे दोनो आत्मसात कर लिए ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती धूमधाम से सम्पन्न हुई

भरत खंड के राजाधिराज सर्वोपरि भगवान नरनारायणदेव की जन्म जयंती फाल्गुन शुद-१ ता. १५-३-२००६ बुधवार दोपहर १२ बजे श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में रंगविरंगी सुगंधितफूलों के हिंडोले में झूलते हुए राधाधिराज परमात्मा श्री नरनारायणदेव के अर्चा स्वरूप की महा आरती प.पू. आचार्य लालजी महाराजश्री ने उतारकर रंगोत्सव के कीर्तन का गान करते उत्सवी मंडल तथा संत एवं यजमान तथा दर्शनार्थी हजारो हरिभक्तों के ऊपर गुलाल की झडी बरसाकर सभी को आनंदित किया था।

बाद में श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में मंदिर के प्रांगण में ट्रेक्टर ऊपर सुशोभित किंशुकपुष्प के रंग से प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने श्रीहरि के सभी आश्रितों को एक घंटे तक रंग करके गुलाबी आनन्द की महंक चारो तरफ विखेर दिया था।

पू. महन्त शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा संत मंडल तथा हजूरी भक्त लोग एवं फूलदोलोत्सव के यजमान प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल तथा प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (कमेटी मेम्बरश्री) परिवारने इस उत्सव में दिव्य लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाया। प.पू. लालजी महाराज साक्षात् बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के स्वरूप में सुशोभित हो रहे थे। मस्तक पर श्वेत साफा एवं श्वेत वस्त्र परिधान के रूप में पहने हुए थे। जिसका दर्शन करके जीवात्मा धन्यता का अनुभव करके भाग्यशाली बने थे। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से पुष्प दोलोत्सव प्रसंग का आयोजन बडे सुन्दर ढंग से हुआ था। इस प्रसंग पर शा. गोलोक स्वामी शा. स्वा. सत्यप्रकाशदास तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रशसनीय थी। - *कोठारी धर्मप्रकाशदास*

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव बाल स्वरुप कष्ट भंजन देव पाटोत्सव तथा शहर के ब्राह्मणों का ब्रह्मभोजन धूम धाम से संपन्न हुआ

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायणने अनेक जीवात्माओं के कल्याण हेतु संवत १८७८ में फाल्गुन शुक्ल ३ के दिन श्रीनगर अहमदाबाद में भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव को अपने बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किया तथा कांकरिया के किनारे फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन शहर के ब्राह्मणों को भोजन देकर तृप्त किया था।

इस दिव्य अलौकिक तीर्थस्थल पर आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजकी आज्ञा से छत्री बनाकर उस में श्रीहरि के चरणारविंद को फाल्गुन शुक्ल ५ के दिन प्रतिष्ठित किया साथ में कष्ट भंजन देव की प्राण प्रतिष्ठा भी की थी। इस तीर्थस्थल में आज बडा शिखरी मंदिर है। परंतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तीन शिखर वाला मंदिर अद्यतन कलात्मक ढंग से नया निर्मित हो रहा है। प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी तथा कोठारी स्वामी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव श्री हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव तथा बाल स्वरूप कष्ट भंजनदेव का पाटोत्सव तथा ब्राह्मण भोजन का उत्सव ता. ४-३-०६ फाल्गुन शुक्ल ५ के दिन धूम धाम से सम्पन्न हुआ। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से नवनिर्मित मंदिर में महाविष्णुयाग तथा प्रातः ठाकुरजीका महा अभिषेक एवं कष्टभंजनदेव का महाअभिषेक प.पू.ध.धु. आछार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधि से सम्पन्न हुआ। इसके बाद पूज्य महाराजश्री ने ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती उतारी थी।

प्रासंगिक सभा में उत्सव के यजमानो ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजनअर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। महंत स्वामी तथा हरिभक्तों के आग्रह भरे आमंत्रण पर प.पू. पडे महाराज पधारे थे। महंत स्वामी तथा हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्री का बडी श्रध्धा से वाजते-गाजते का स्वागत किया था। सभा में आपने सभी को अलौकिक हार्दिक आशीर्वाद दिया था। उपस्थित संतो ने भी प्रेरक प्रवचन किया था।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने संतो तथा हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। बहनो को दर्शन का लाभ एवं आशीर्वाद देने हेतु प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपागादीवाला पधारी हुई थी। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने ब्रह्म भोज में अपने हाथों से ब्राह्मणों को लड्डू परसकर भोजन करवाया था।

इस प्रसंग पर पुजारी देव स्वामी ने ठाकुरजी का श्रृंगार करके दर्शन का अलौकिक सुख दिया था। अन्य सेवा में स्वामी यज्ञप्रकाशदास, साधु स्वयंप्रकासदास, नरोत्तम भगत तथा सहयोगी संत मंडल तथा हरिभक्तोंने इस के साथ न.ना.यु. मंडल एवं कांकरिया, मणीनगर की बहनें भोजनालय की सेवा में उदाहरण बनी थी। २० से २५ हजार भक्त तथा ३०० से अधिक ब्राह्मणों ने भोजन का लाभ लिया था। - *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कांकरिया*

खाण श्री स्वामिनारायण मंदिर का २५ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

संप्रदाय के शीघ्रकवि श्रीहरि के सखा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म स्थान खाण श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री, श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा अ.नि.स.गु. गवैया स्वामी की प्रेरणा से एवं स.गु. पूर्व महंत स्वामी बालकृष्णदासजी तथा स.गु. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी (मूली) के मार्गदर्शन से मुंबई की हालार महिला भक्ति मंडल की तरफ से श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज का १८वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध की कथा स.गु. ज्ञानवल्लभदासजी के बक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री तथा पूज्या श्रीराजा आदि धर्मकुल परिवार ता. ५-३-०६ की रात्रि में पधारे उस समय महंत स्वामी तथा अन्य संतो ने तथा हरिभक्तों ने खूब आनन्द के साथ स्वागत किया था। फाल्गुन शुक्ल ७ ता. ६-३-०६ की ब्राह्म मुहूर्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया था। संपूर्ण विधि मूली के गोर शा. जीतुभाई ने कराई थी।

प्रासंगिक सभा में सर्व प्रथम कथा की पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराज के वरद् हाथों

सें हुई थी। अंत में श्री हरि के ऊपर स्वस्त्रों ने हार्दिक आशीर्वाद दिया थआ । सभा संचालन छपैयाप्रसाद ने किया था। इस प्रसंग के मुख्य यजमान हालारी महिला मंडल मुंबई, कथा की मुख्य यजमान सविता बहन रवजीभाई नानजीभाई वरु मंदिर के कलरकाम के यजमान कानजीभाई हरजीभाई नाथाभाई वसाणी, भाणाभाई, परबतभाई, प्रकाशभाई आदि भक्त थे।

महंत स्वामी ओमप्रकाशदासजी के साथ सेवा में को.जे.पी. स्वामी, धर्मप्रियदासजी, अनिरुध्ध स्वामी, श्रीप्रकाश स्वामी, पार्षद चंदु भगत, विक्रम भगत तथा धर्मेश भगत की सेवा प्रेरणादायी थी।

बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देने के लिए अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पूज्या श्री राजा पधारी हुई थी।

- को. भानु स्वामी मूली

कुबडथल गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव देश के कुबडथल गाँव में १०० वर्ष पुराने मंदिरका जीर्णोध्धार आज से पांच वर्ष पूर्व किया गया था। यहाँ के निष्ठावान हरिभक्तों ने तन, मन, धन के सहयोग से सर्वोपरि श्रीहरि के सर्वोपरि मंदिर के निर्माण की भावना से सुंदर कलाकृति से पूर्ण अद्यतन नव्य भव्य मारबल से निर्माण किया। अपने हरिमंदिरों की श्रेणी में शिखरी मंदिर संप्रदाय में प्रथम निर्माण हुआ। सभी सजावट से पूर्ण मंदिर में ता. २३-२-०६ के दिन मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. १९ से २३ फरवरी तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाह पारायण संप्रदाय के विद्वान क थाकार शा.स्वा. पुस्त्रोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी, जेतलपुर) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ था। २१ से २३ तक महा विष्णुयाग किया गया था। पांच दिन तक रात्रि का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया था।

ता. २३-२-०६ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हातों से श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री हनुमानजी, श्री गणपति देव की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा वेद विधि से संपन्न की गयी थी।

इस प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री हरिभक्तों के विशेष आग्रह पर पधारी हुई थी। कुबडथल गाँव के तथा बाहर रहने वाले हरिभक्तों के सहयोग से युवको ने महोत्सव का उत्तरदायित्व सम्हाला था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर निर्माण तथा मंदिर में सेवा करने वाले दाताओं को शुभाशीर्वाद दिया था। महोत्सव के समय नाना स्थानों से संत महंत पधारे हुए थे। नयनरम्य मंदिर को देखकर हरिभक्त भी आनन्दित हुए थे।

कुबडथल गाँव के हरिभक्तों की सब से उत्तम यह सेवा है इसलिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था।

कलोली (जेतलपुर देश) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रथम आगमन

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी, हरिकृष्ण महाराज देश के कलोली (जी. खेडा) गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में फाल्गुन शुक्ल-१ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति पप.पू.ध.धु. आचार्यश्री के पीठाधिरुढ होने के बाद सर्वप्रथम कलोली गाँव के हरिभक्तों को प्रसन्न करने के लिए यहाँ पधारे थे। सर्वप्रथम गाँव में पधारने के साथ श्री राधाकृष्ण मंदिर तथा रत्नेश्वर महादेवका दर्शन करके श्री स्वामिनारायण मंदिर में पधारे थे। वहाँ श्रीहरि की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। सभा में जेतलपुर से पधारे हुए शा.स्वा. पुस्त्रोत्तमप्रकाश-दासजीने तथा शा. हरिओमप्रकाशदासजी तथा घनश्याम स्वामी आदि संतोने प्रासंगिक व्रवचन का सभी को लाभ दीया। अंत में समस्त सभा को पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसके बाद ४१ जितने मुमुक्षुओं के घर पदार्पण करके घर को तीर्थ बनाया था। अगल-बगल के गाँव के हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लिया था। प.भ. कनुभाई, प.भ. प्रहलादभाई जयंतीभाई तथा घनश्यामभाई ठक्कर आदि हरिभक्तों ने सेवा का लाभ लिया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर (नवनिर्मति)

विंदु सरोवर के रमणीय तट पर श्री स्वामिनारायण भगवान के दिव्य चरणाविंद से प्रसादी स्म बना इस तीर्थ स्थल में प.पू. पडे महाराजश्री के वरद हाथों से नूतन शिखरी मंदिर का खात पूजन संपन्न हुआ। जो मंदिर पूर्ण होने वाला है। इस मंदिर में ता. २७-२-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से मातृ- श्राद्ध यात्रिक भवन तथा संत निवास की खात पूजा वेदविधि से सम्पन्न हुई।

लाल पत्थर से बना इस मंदिर को देखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री बहुत प्रनस्न हुए थे। सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे। स.गु.शा. प्रेमस्वस्मदासजी (नारायणपुरा महंत) ने इस प्रसंग पर सत्संगिभूषण की पांच दिवसात्मक कथा की थी समग्र आयोजन शा.स्वा. प्रेमस्वस्मदासजीने किया था।

इटादरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटादरा के वार्षिक पाटोत्सव के यजमान प.भ. नटवरलाल जोईताराम परिवार की तरफ से ता. १६-२-०६ से ता. १८-२-०६ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण त्रिदिनात्मक पारायण कथा एवं ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती इत्यादिका आयोजन किया गया था। कथा का रसपान शास्त्री नारायणवल्लभदासजीने करवाया। अ.नि. जोइताराम बापा के स्मरणार्थ कथा प्रसंग में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री महाराज ता. १६-२-२६ के दिन पधारकर ग्रामजनों को सुखी किये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को दर्शन का अलौकिक लाभ दिये। सभा में उपस्थित होकर सभी सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। स.गु. स्वा. कृष्णप्रसाददासजी (टोरडा महंत) की प्रेरणा से इस उत्सव का आयोजन किया गया था। शा.विश्वप्रकाशदासजी, शा. छपैयाप्रसादासजी तथा पू. अभिषेकप्रसाददासने रात्रि कथा की थी।

विसनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १०-२-०६ के दिन ३५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया था। यजमान के स्म में बाबु भगत थे। श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण स.गु. शा. छपैयाप्रसाददासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। हरिभक्तोने देव दर्शन तथा कथा का लाभ लिया था।

- हार्दिक भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (सोनावाडा) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से माघ वद-४ ता. १७-

२-०६ शुक्रवारको मंदिरका ९वाँ पाटोत्सव श्री गोरधनभाई एम. सुथार तथा धर्मेशभाई की तरफ से संपन्न हुआ था। प.भ. श्रेयसभाई कांतिलाल मेहता की तरफ से प्रसाद का आयोजन किया गया था। हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे।

उवारसद में प्रसादी की छत्री

सर्वोपरि श्री हरि दंढाव्य प्रदेशमें भी विचरण करते हुए आये और इस गाँव को भी अपने चरण रज से पावन किये थे। जिसकी लीला संप्रदाय के शास्त्रों में बडी सुन्दर रीति से वर्णन की गयी है। इस दिव्य अलौकिक स्थल पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने ता. १२-३-०६ के दिन अपने हाथों से छत्री के भीतर चरणारविन्द का विधिवत अद्घाटन किया था। गाँव के सभी हरिभक्त तथा यजमान परिवार प.भ. कनुभाई छबाभाई को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रसंग पर घनश्याम स्वामी, शा. सत्यप्रकाशद स्वामी, शा. विजयप्रकाश, नीलकंठस्वामी तथा राम स्वामी इत्यादि संतो ने दंढाव्य देश में विचरण की लीला का वर्णन किया था। भोजन प्रसाद की व्यवस्था प.भ. महेन्द्रभाई पटेलने की थी। दोनो मंदिर में प.पू. महाराजश्रीने आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिया था। आयोजन प.भ. घनश्यामभाई पटेल द्वारा किया गया था।

- को. बाबूभाई

मणीयोर (इडर देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर

यहाँ मणीयोर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीमद् भागवत सप्ताह के यजमान प.भ. डी. के. पटेल, प.भ. मोहनभाई डी. पटेल तथा सिंहासन के यजमान प.भ. पूंजी बहन पटेल तथा पू. महाराजश्री के रहने की व्यवस्था के यजमान प.भ. शामणभाई कलाभाई थे। सभी यजमानो के ऊपर महाराज श्री अति प्रसन्न हुए थे।

थुरावास (इडरदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में रजत जयंती महोत्सव संपन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा इडर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से थुरावास मंदिर के रजत जयंती प्रसंग पर त्रिदिनात्मक विष्णुयाग, कथावार्ता इत्यादि प्रसंग प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। ता. २५-२-०६ के दिन प.पू. महाराजश्री के वरद हाथों से यज्ञ की पूर्णाहुति अन्नकूट आरती का सुन्दर आयोजन सम्पन्न हुआ था। हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी, प्रांतीज, सापावाडा, लेई, अमदाबाद, मूली, महुन्द्रा आदि स्थानो से संत पधारकर प्रेरक वाणी का लाभ दिये ते। समस्त ग्रामजनो को तथा यजमान परिवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। बहनों को अ.सौ. प.पू. गादीवालाने दर्शन तथा आशीर्वाद का दिव्य लाभ दिया था।

- को. सत्यसंकल्पदास, इडर

साचोदरा मंदिर में भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा इडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से इडरदेश के साचोदर गाँव में शेठ श्री माधवभाई करशनभाई पटेल की धर्मपत्नी के स्मरणार्थ श्रीमद् भागवत कथा शा.स्वा.हरिजीवनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी।

पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति अपने हाथों से करके गाँव के हरिभक्तों को तथा यजमान परिवारश्री हरिभाई तथा बीपीनभाई को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

सभासंचालन शा. आनंदजीवन-दासजीने किया था।

- को. सत्यसंकल्पदास, इडर

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली

मूली गाँव में प.भ. हर्षदभाई खत्री (तबलावादक) के घर ता. ८-२-०६ के दिन श्री कृष्ण जन्म के निमित्त सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। मंदिरमें महंत श्री ज्ञानवल्लभ स्वामी, पू. उत्तम स्वामी आदि संत पधारे थे।

युवान संत, पार्षद सभी मिलकर सुन्दर कीर्तन भजन किये थे। चि. कृष्णा को आशीर्वाद दिये थे। सभा के अंत में सभी सभाजन को प्रसाद वितरण किया गया था।

- हर्षदभाई, मूली

सुरेन्द्रनगर मंदिर में सत्संग प्रवृत्ति

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के नवनिर्मित शिखरी मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव में श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा श्री घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा के बाद समस्त सत्संग समाज में नया उत्साह छा गया है। प्रतिदिन मंगला आरती, श्रृंगार आरती, भोग आरती, सन्ध्या आरती, शयन आरती तथा कथा वार्ता में अधिक संख्या में लोग-लाभ लेते हैं। सत्संग सभा तथा नये नये कार्यक्रमो से हरिभक्तों मे खूब आनन्द छाया हुआ हैं। पू. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी, कोठारी कृष्णवल्लभ स्वामी, प्रेमवल्लभ स्वामी सुन्दर प्रवृति कर रहे है।

पुजारी विश्वस्वरूप स्वामी, शांतिप्रकाश स्वामी, सत्यस्वरूप स्वामी, ठाकुरजीकी उत्तम सेवा करके भक्तों को प्रसन्न किया। बहनो में सां.यो. कमलाबा का मंडल सत्संग पूरित करता है। यहाँ के नूतन मंदिर के निर्माण से सत्संग मे नया उत्साह आ गया है।

- सत्यप्रकाश स्वामी, मूली

खेरवा (जतना)

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा उन्हीं के अपरस्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से खेरवा गाँव के सत्संग सभा में साधु भजनप्रकाशदास, साधु दिव्यप्रकाशदास, साधु भक्तिहरिदास इत्यादि संतो ने सभा में वचनामृत कीर्तन-भजन इत्यादि करके हरिभक्तों को दिव्य लाभ दिया था।

- पटेल अमृतलाल, लखतर

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (U.S.A.)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू. बडे महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया मंदिर की कमेटी तथा महंत स्वामी देवप्रसाददासजीकी प्रेरणा से वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन करके शिक्षापत्री जयंती उत्सव मनाया गया था। शाकोत्सव को भी धूम धाम से सम्पन्न किया गया। महंत स्वामी के अथक परीश्रम से तथा हरिभक्तों के सहयोग के यह कार्य सरल हो गया था। देव स्वामीने शाकोत्सव का माहात्म्य समझाया था। १० जितना हरिभक्तों ने सेवा कार्य किया था। यजमानों का संमान देव स्वामीने किया था। प्रमुखश्री नयनभाई परीख तथा निलेष पटेल ने सत्संग पर प्रकास

डाला था। शिवरात्री का उत्सव अच्छे ढंग से मनाया गया। कथाकार योगेन्द्रभाई भट्टने शिवरात्रि का माहात्म्य समझाया। श्री योगेन्द्रभाई का संमान रमेशभाई तथा उमेशभाई ने किया न्युजर्सी के I.S.S.O. के वाईस प्रेसीडेन्ट श्री भक्तिभाईने महंत स्वामी का स्वागत किया। महंत स्वामी ने शिवरात्री माहात्म्य समझाया था। नयनभाई परीखने आभारविधि की थी। इस प्रसंग में अनेक राज्यों से हरिभक्त आये हुए थे। श्री निलेश पटेल ने आगामी कार्य क्रम के विषय में बताया था। बालकोने सुन्दर प्रदर्शन का आयोजन किया था।

सत्संग शिबिर : प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १७ फरवरी को प्रातः काल ८ बजे से आबाल-वृद्धो को सत्संग सभा की गयी थई। जिसमें बोस्टन से युवक मंडल के साथ शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. देव स्वामीने श्रीहरि तथा उनके दिव्य कुल धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। मानसी पूजा का महत्व बताया था। श्री तेजेन्द्रभाई राव तथा न्यूजर्सी से पधारे हुए प.भ. प्रहलादभाई पटेल, श्री निलेशभाई पटेल ने भी अपने जीवन में सत्संग को उतारने की वात की थी। श्री अंकित चंद्रेश पटेलने भी क्षी नरनारायणदेव युवक मंडल के विषय में सुन्दर व्याख्यान दिया था।

इस प्संग परसोने में सुगंध जैसी बात के अनुसार पू. चि. सौम्यकु मार पू. चि. सुव्रतकुमार का जन्मोत्सव नयेबालको के तथा युवानो के सहयोग से धूमधाम पूर्वक सम्पन्न हुआ। मंदिर के प्रमुख श्री नयनभाई परीखने आभारविधी की। शनिवारका दिन होने से देव स्वामीने श्री हनुमानजीका माहत्म्य बताया था प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

- प्रवीणभाई शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ह्युस्टन मंदिर का ६ठा पाटोत्सव १२ मार्च के दिन धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर शिकागो के शा.धर्मवल्लभदासजीने सत्संगिजीवन की त्रिदिनात्मक कथा करके सभी को रसनामृत पान कराया। पूर्णाहुति के दिन प.भ. प्रमुखश्री देवेन्द्रभाई तथा नटुभाई (लसुन्द्रा) ने ध्वजा चढाने का लाभ लिया था। महापूजा तथा छप्पनभोग भगवान को अर्पण किया गया था। इस अवसर पर सेवा भावी डॉ. ने सैकडो रोगियो का निदान किया था। श्री नरनारायण युवक मंडल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम करके सभी को आनंदित किया था। पू. ज्ञान स्वामी तथा मुनि स्वामी ने कार्यक्रम में खूब सहयोग किया था। हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से ऐसे उत्सव धुमधाम से मनाये जाते है। *- रमेश टी. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (U.K.)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २६-२-०६ रविवार के दिन प.भ. मगनलाल चंदुभाई चौहाण, अ.सौ. मंजुला बहन मगनलाल चौहाण के यजमान पद पर शिवरात्री का पूजन अर्चन संपन्न हुआ। पूजारि रसिकभाई ने शिवरात्री के पूजन का माहात्म्य समझाया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-कृपा से सत्संग अच्छा चल रहा है। *- हेमराजभाई चौटलिया*

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन डी.सी. चेप्टर)

४ मार्च को यहाँ सायंकाल सभा में भजन-कीर्तन-नित्य नियम कथा इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सभा नियमित होती है जिसमें हरिभक्त खूब संख्या में आते है।

केन्नेडा (I.S.S.O. चेप्टर)

यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रति शनिवार को सत्संग सभा होती है। सायंकाल ४ से ६-३० तक सभा में वचनामृत सत्संगिजीवन, शिक्षापत्री इत्यादि शास्त्रों का वांचन किया जाता है। इसके साथ कीर्तन, धुनि, नित्य नियम तथा ठाकुरजी की आरती की जाती है। वर्ष के भीतर जितने उत्सव होते हैं प्रायः सभी मनाये जाते है।

अंत में यहाँ पर इन्डिया से आये हुए श्री नरनारायण युवक मंडल के प्रमुखश्री प.भ. उदयनभाई महाराजाने वचनामृत के ऊपर, नियम स्वस्म निष्ठा, निश्चय, पक्ष के विषय में खूब सरल ढंग से समझाया।

प.भ. भाईलालभाई करशनदास पटेल, प.भ. रसिकभाई कोठा वाला, प.भ. शशिकान्तभाई, श्री महेशभाई टांक, श्री दिनेशभाई पटेल, श्री संजीवभाई पटेल, श्री भीखाभाई पटेल, श्री नटुभाई पटेल आदि हरिभक्तं सत्संग सभा में खूब उत्साह के साथ उपस्थित होकर लाभ दिये थे। यहाँ पर सभी लोग प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की बडी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

- भाईलालभाई करशनदास

अक्षरनिवासी संत हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

बावणा : श्रीमती सोनी पुष्पाबहन जयंतीलाल भीलाणी ता. २-३-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

असारवा-अमदाबाद : युवा प्रतिभाशाली प.भ. निरवकुमार अतुलबाई पटेल मेंग्लोर में विद्या अभ्यास के समय अक्षरनिवासी हुए है, श्रीहरि उनकी आत्माको शांति दें।

चलोडा (जीतबाका) : यहाँ मंदिर के कोठारी प.भ. रमेशभाई की माताजी चंपाबहन (८० वर्ष) ता. २०-२-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मेघाडीनगर : प.भ. भीखुभाई जादवभाई बाबरीया की माताजी चंपाबहन जादवभाई ता. १२-३-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

वडु : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुराने ट्रस्टी तथा श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. डाह्याभाई अंबालाल पटेल ता. २८-३-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

वाली (राजस्थान) : श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत स्वामी श्री निर्मलदासजी ७२ वर्ष की उम्र में ता. १८-३-०६ के दिन भगवान श्री स्वामिनारायण का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है। मारवाडी सत्संग समाजमें बहुत बडी कमी हुई है।



बापुपुरा (माणसा) मंदिर में रजय जयंती प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



कलोली (जेतलपुर देश) की सभा में महाराजश्री का पूजन करते हुए श्री नरेन्द्रभाई ।



सिद्धपुर नवनिर्मित मंदिर में संत निवास तथा यात्रिक भवन की खात पूजा विधि करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



थुरावास (ईडर देश) में मुमुक्षु के घर को पावन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



उवारसद में प्रसादी के स्थल पर छत्री एवं चरणारविंद को प.पू. महाराजश्री के हाथो से उन्मुक्त (खुल्ला) किया गया ।



उवारसद में यजमान प.भ. कनुभाई पटेल तथा परिवार प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



थुरावास (इडरदेश) यज्ञ विधि में प.पू. महाराजश्री ।



थुरावास गाँव में यजमान परिवार प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581 REG. NO. G.A.M.C. 003 Valid up to June 2006
Permitted to Post AHME. P.S.O. On 11th of Every Month



कांकरिया मंदिर में बाल स्वरूप कष्टभंजन देव का अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



कांकरिया मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।





कांकरिया मंदिर में प्रासंगिक सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।





कांकरिया मंदिर में शहर ब्रह्मभोजन के प्रसंग पर संत ब्राह्मणों को श्रीहरि की तरह स्वयं भोजन परसने का अलौकिक लाभ देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा समस्त [illegible]